

SACHCHA RAHI

• ISSN 2582-4007 • VOL 25 • ISSUE 08 • OCTOBER 2026

हिन्दी मासिक

अक्टूबर 2026

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

इन्सानियत के लिए बड़ा खतरा

जब जुल्म के लिए मापदण्ड यह बन गया कि ज़ालिम कौन है ?
ज़ालिम की राष्ट्रीयता क्या है ? , ज़ालिम का समुदाय क्या है ?
ज़ालिम की भाषा क्या है ? , ज़ालिम का मज़हब क्या है ?
तो इन्सानियत के लिए बड़ा खतरा पैदा हो जाता है ।

(हज़रत मौलाना सै० अबुल हसन अली नदवी रह ०)

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=



सरपरस्त
इज़रत मौलाना सै० बिलाल अब्दुल हई
हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु० गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं० 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ - 226007
समय: (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail: sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि
एक प्रति ₹ 40/-
वार्षिक ₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 युएस. डॉलर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृपया पैसा जमा करने के बाद
दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई-मेल
पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य
सूचित करें।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

SACHCHA RAHI. ISSN 2582-4007

अक्टूबर 2026

वर्ष 25

अंक 08

हृदय परिवर्तन ज़रूरी

इंसानों की समस्याओं और कठिनाइयों का हल न तो एक जैसे कपड़े पहनने में है, न एक भाषा बोलने या एक जैसी सभ्यता अपनाने में है, और न ही धन-दौलत में है।

इनमें से किसी एक में भी इतनी ताक़त नहीं है जो पूरी दुनिया को बदल सके। जब तक मन के भीतर की दुनिया नहीं बदलेगी, तब तक बाहर की दुनिया नहीं बदल सकती। सच तो यह है कि पूरी दुनिया की बागडोर दिल के हाथ में है।

(इज़रत मौलाना सै० अबुल हसन अली नदवी रह०)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा.....	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
नजात का रास्ता.....	मौलाना अब्दुरशीद राजस्थानी नदवी	07
आज़ाद हिन्दुस्तान.....	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
इस्लाह और आत्म मंथन.....	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	13
इस्लाम ही क्यों?.....	मौलाना अब्दुरहीम नदवी	17
कश्ती डूब रही है	इं० जावेद इक़बाल	20
सीरते नबवी	डॉ० नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	23
मस्जिद से मुसलमान का संबंध	सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	29
सीरत हज़रत मुहम्मद सल्ल०	मुहम्मद अरशद नदवी स्योहारा बिजनौर	30
आशा की किरण.....	मुहम्मद इक़बाल नदवी	34
ए०आई० के दौर में	मुबारक कापड़ी	36
दुर्रें यतीम	मंज़र आलम अल्वी नदवी	39
स्वास्थ्य.....	डॉ० चारु बागा	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार.....	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले खैर हज़रात से.....	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-कहफ:-

अनुवाद:-

वे बोले आपको ध्यान है जब हम चट्टान के निकट ठहरे थे तो मैं मछली भूल गया और शैतान ही है जिसने मुझे उसको भुला दिया और उसने तो नदी में आश्चर्यजनक रूप से अपनी राह ली(63) उन्होंने कहा वही तो वह जगह है जिसकी हमें तलाश थी, फिर वे दोनों अपने पदचिन्हों को पहचानते हुए वापस लौटे(64) तो (वहाँ) उन्होंने हमारे (विशेष) बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसको हमने अपने पास से रहमत (कृपा) से सम्मानित किया था और अपने पास से विशेष ज्ञान सिखाया था(65) मूसा ने उनसे कहा कि क्या मैं आपके साथ इसलिए रह सकता हूँ कि जो भलाई आपको सिखाई गई है आप वह मुझे भी सिखा दें(66) वे बोले कि आप मेरे साथ बिल्कुल सब्र न कर सकेंगे(67) और आप उस चीज पर सब्र भी कैसे कर सकते हैं जो आपके ज्ञान परिधि में नहीं(68) (मूसा ने) कहा कि अगर अल्लाह ने चाहा तो आगे आप मुझे सब्र करने वाला ही पाएंगे और मैं आपकी किसी मामले में अवज्ञा

(नाफरमानी) न करूंगा(69) उन्होंने कहा अगर आप मेरे साथ चलते हैं तो जब तक मैं खुद ही किसी बात का उल्लेख आरम्भ न कर दूँ आप मुझ से किसी चीज के बारे में न पूछें⁽¹⁾(70) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि जब नाव में सवार हुए तो उन्होंने उस (के एक तख्ते) को तोड़ दिया, (मूसा) बोले आपने इसलिए तोड़ा है कि नाव वालों को डुबो दें, आपने तो बड़ा गजब कर डाला(71) उन्होंने कहा क्या मैंने आपसे कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र कर ही न सकेंगे(72) (मूसा ने) कहा मेरी भूल पर पकड़ न कीजिए और मेरे मामले में मुझे तंगी में न डालिए(73) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि जब एक लड़के से मिले तो उन्होंने उसको मार डाला (मूसा) बोल पड़े आपने एक निर्दोष जान को बिना किसी जान के मार डाला, निश्चित रूप से ही आपने बड़ा अनुचित कार्य किया(74) उन्होंने कहा, क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम हरगिज मेरे साथ सब्र कर ही नहीं सकते(75) वे बोले इसके बाद अगर मैंने आप से कुछ पूछा तो आप मुझे साथ न

रखिएगा, निश्चित रूप से मेरे बारे में आप उज़्र (असमर्थता) की हद तक पहुँच गये (76) फिर दोनों चले यहाँ तक कि एक बस्ती वालों के पास पहुँचे तो दोनों ने वहाँ वालों से खाने को मांगा तो उन लोगों ने उनकी मेहमानी करने से इन्कार कर दिया फिर उनको उस बस्ती में एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी तो उन्होंने उसको ठीक कर दिया (मूसा) ने कहा, अगर आप चाहते तो इस पर कुछ मेहनताना तय कर लेते(77) उन्होंने कहा कि बस यह मेरे और आपके बीच अलगाव (का समय आ गया) है, अब मैं उन चीजों की हकीकत आपको बता देता हूँ जिन पर आप सब्र न कर सकें⁽²⁾(78) रही नाव तो वह कुछ गरीबों की थी जो समुद्र में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसको ऐबदार कर दूँ और उनके पीछे एक राजा था जो जबरदस्ती हर नाव ले लिया करता था(79) रहा लड़का तो उसके माँ-बाप ईमान वाले थे तो हमें डर हुआ कि वह उन दोनों को सरकशी और कुफ्र करके तंग न कर दे(80) तो हमने चाहा कि उनका पालनहार उनको ऐसा

बदल प्रदान करे जो पवित्रता में उससे बेहतर हो और सद्ग्रहण में उससे बढ़ कर हो(81) और रही दीवार तो वह शहर के दो अनाथ बच्चों की थी और उसके नीचे उनका खजाना था और उनके पिता भले (इंसान) थे तो आपके पालनहार ने चाहा कि वे दोनों पक्की उम्र को पहुँच जाएं और अपना खजाना निकाल सकें, यह केवल आपके पालनहार की कृपा से हुआ और मैंने अपनी राय से कुछ नहीं किया, यह है हकीकत उन बातों की जिन पर आपसे सब्र न हो सका(82) और वे आपसे जुलकरनैन के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि आगे मैं तुम्हारे सामने उनका कुछ हाल पढ़ कर सुनाता हूँ(83)।

तफसीर (व्याख्या):-

1. हदीस में है कि हजरत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी कौम को नसीहतें कर रहे थे कि एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि ऐ मूसा! धरती पर आपसे बड़ा कोई आलिम (ज्ञानी) है? उन्होंने कहा नहीं, यह उत्तर इस ऐतबार से सही था कि वे बड़े पैगम्बरों में थे लेकिन अल्लाह को यह वाक्य पसंद न आए और वहा आई कि जिस जगह दो नदियाँ मिलती हैं उसके पास हमारा एक बन्दा है जो तुम से अधिक ज्ञान रखता है, हजरत मूसा ने प्रार्थना की कि मुझे उनका पता

बता दिया जाए ताकि मैं वहाँ जा कर उनसे लाभ उठा सकूँ, आदेश हुआ कि उसकी खोज में निकलो तो तल कर एक मछली साथ ले लेना, जहाँ वह मछली खो जाये समझ लेना वहीं हमारा बन्दा मौजूद है, हजरत मूसा अलैहिस्सलाम नवजवान शिष्य व सेवक हजरत यूशा को लेकर निकले जो खुद भी नबी और बाद में हजरत मूसा के उत्तराधिकारी हुए, हजरत मूसा ने मछली जंबील (टोकरी) में साथ ली और यूशा से कहा कि इसका ध्यान रखना, चलते-चलते एक जगह आराम करने के लिए लेटे, हजरत मूसा को नींद आ गई, हजरत यूशा ने देखा कि मछली निकल कर सुरंग बनाती हुई समुद्र में चली गई, जब हजरत मूसा जागे तो कहना भूल गए और आगे बढ़ गये, अब हजरत मूसा को थकान और भूख का एहसास हुआ, जब सेवक से खाना मांगा तो उनको वह आश्चर्यजनक घटना याद आई, हजरत मूसा ने कहा कि वही तो हमारा वांछित स्थान था, अब पैरों के चिन्ह देखते हुए वापस लौटे, वहाँ हजरत खिज़्र अलै० से भेंट हुई, जब हजरत मूसा ने मुद्दा रखा तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी ज्ञान परिधि अलग है और हमारी अलग, साथ रहना कठिन है, मूसा की जिद पर उन्होंने कहा कि ठीक है मगर मेरे बिना कहे तुम खुद कुछ न

पूछना, अब यात्रा आरम्भ हुई।

2. यह तीन घटनाएं घटित हुई, हजरत खिज़्र प्राकृतिक मामलों पर नियुक्त थे और हजरत मूसा तशरीई (शरीअत के) पैगम्बर थे, सही बुखारी में है कि हजरत खिज़्र ने हजरत मूसा से कह दिया था कि अल्लाह तआला ने मुझे ऐसा ज्ञान दिया है जो आपके पास नहीं और आपको ऐसा ज्ञान दिया है जो मेरे पास नहीं, तीनों घटनाओं में हजरत खिज़्र ने अल्लाह के दिये हुए अपने ज्ञान के अनुसार काम किया, हजरत मूसा तशरीई पैगम्बर थे, उन्होंने अल्लाह के दिये हुए अपने ज्ञान के अनुसार तुरन्त टोक दिया, अंत में बात यही ठहरी कि दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं और निबाह कठिन है, फिर हजरत खिज़्र ने तीनों घटनाओं की हकीकत बयान कर दी, जिसका संबंध पूर्ण रूप से अल्लाह के तकवीनी (प्राकृतिक) व्यवस्था से था, जिसके लिए अल्लाह ने फरिश्ते नियुक्त कर दिये हैं, हजरत खिज़्र भी उसी प्राकृतिक शक्ति पर अल्लाह की ओर से नियुक्त थे, बाहरी धार्मिक व्यवस्था (निजाम-ए-शरीअत) से उसका कोई संबंध नहीं था, दुनिया में सारे इन्सान अल्लाह के दिये हुए धर्म व्यवस्था के पाबंद हैं, प्राकृतिक व्यवस्था परोक्ष के पर्दे में है, उसका इन्सान पाबन्द नहीं है।

❖❖❖

नजात का रास्ता

मौलाना अब्दुरशीद राजस्थानी नदवी

उस्ताद दारुल उलूम नदवतुल उलमा

ईमान और शिर्क:—

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि एक शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और पूछा: "या रसूलल्लाह! वह दो चीज़ें क्या हैं जो अंजाम तय कर देती हैं?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो शख्स इस हाल में दुनिया से जाए कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, वह जन्नत में दाखिल होगा और जो इस हाल में मरे कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता हो, वह जहन्नम में दाखिल होगा।"

(सहीह मुस्लिम—93)

इस हदीस पर गौर करने से मालूम होता है कि इंसान के अंजाम के लिए सबसे अहम चीज उसका ईमान और तौहीद है। इंसान की सबसे बड़ी कामयाबी यह है कि वह अल्लाह के सामने ईमान की हालत में हाज़िर हो और उसकी सबसे बड़ी नाकामी यह है कि शिर्क की हालत में दुनिया से जाए। सहाब—ए—किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन भी अपनी ज़िंदगी में इन्हीं असल और बुनियादी बातों की फिक्र रखते थे। वे जन्नत की

राह और जहन्नम से बचने का रास्ता पूछते और यह जानना चाहते थे कि कौन—से अमल उन्हें अल्लाह की रज़ा और आखिरत की कामयाबी तक पहुँचाएँगे।

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि एक देहाती ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी की लगाम थामकर पूछा: "या रसूलल्लाह! मुझे वह अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत के करीब कर दे और जहन्नम से दूर कर दे।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ कायम करो, जकात दो और रिश्तेदारों के हक अदा करो।"

(सहीह बुखारी: 5983, सहीह मुस्लिम: 13)

इस जवाब में जन्नत की राह की बुनियादी बातें एक साथ आ गईं। सबसे पहले तौहीद है, यानी अल्लाह को अकेला माबूद मानना और सिर्फ उसी की इबादत करना। इसके साथ नमाज़, जकात और रिश्तेदारों के हक अदा करना है। यानी ईमान सिर्फ दिल की बात या ज़बान का इकरार नहीं बल्कि उसका असर

इंसान की ज़िंदगी में भी दिखाई देना चाहिए। वह अल्लाह का हक अदा करे और बंदों के हक भी अदा करे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से फरमाया कि बंदों पर अल्लाह का हक यह है कि वे सिर्फ उसी की इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न करें। और जो शख्स उसके साथ किसी को शरीक न करे उसके लिए अल्लाह पर यह हक है कि उसे अजाब न दे। हज़रत मुआज रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कि क्या मैं लोगों को यह खुशखबरी सुना दूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि नहीं कहीं ऐसा न हो कि वे इसी पर भरोसा करके बैठ जाएँ और अमल छोड़ दें।

(सहीह मुस्लिम: 30)

इससे यह बात अच्छी तरह समझ में आती है कि तौहीद ईमान की बुनियाद है, लेकिन तौहीद इंसान को अमल से आज़ाद नहीं करती। सच्चा ईमान बंदे को नमाज़, जकात नेक अमल और अल्लाह की फरमाँबरदारी की तरफ ले जाता है। "ला इलाहा इल्लल्लाह" का मतलब सिर्फ यह कहना नहीं कि अल्लाह एक है

बल्कि यह भी है कि बंदा अपनी जिंदगी में उसी को अपना मालिक और माबूद माने और उसकी बताई हुई राह पर चले।

इसके मुकाबले में शिर्क सबसे बड़ी हलाकत है। कुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने साफ फरमाया: “बेशक अल्लाह इस बात को माफ नहीं फरमाता कि उसके साथ किसी को शरीक ठहराया जाए और इसके सिवा दूसरे गुनाह जिसके लिए चाहता है बख्श देता है।” (अन-निसा: 48) इससे मालूम होता है कि दूसरे गुनाहों का मामला अल्लाह की मर्जी पर है लेकिन शिर्क ऐसी चीज है जिससे इंसान को हर हाल में बचना चाहिए। इसलिए मोमिन के लिए अपने ईमान और तौहीद की हिफाजत से बढ़कर कोई फिक्र नहीं हो सकती।

हज़रत अबू जर गिफारी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौहीद की बड़ी फजीलत बयान फरमाई: “जो बंदा ला इलाहा इल्लल्लाह कहे और उसी पर उसका खातिमा हो वह जन्नत में दाखिल होगा।” अबू जर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा: अगर उसने जिना किया हो और चोरी की हो तब भी? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: “वह जन्नत में जाएगा चाहे उसने जिना किया हो और चाहे चोरी की हो।”

(सहीह मुस्लिम: 94)

इसका मतलब यह नहीं कि जिना, चोरी या दूसरे गुनाह मामूली हैं और इंसान गुनाह करता रहे। नहीं, गुनाह से बचना जरूरी है और हर गुनाह पर अल्लाह के सामने जवाब देना होगा। इस हदीस का मतलब यह है कि तौहीद पर मरने वाला गुनाहगार मोमिन भी उस शख्स के बराबर नहीं हो सकता जो शिर्क की हालत में दुनिया से गया। मोमिन के गुनाह अल्लाह की रहमत और मगफिरत के दायरे में हैं। अगर अल्लाह ने चाहा तो अपने फज्ल और रहमत से उसे बगैर सजा के माफ फरमा देगा और अगर उसके गुनाहों पर सजा हुई भी तो हमेशा जहन्नम में नहीं रहेगा। तौहीद पर मरने वाला शख्स आखिरकार अल्लाह की रहमत से इंशाअल्लाह जन्नत में दाखिल होगा। इसके बरखलाफ शिर्क की हालत में मरना सबसे बड़ी हलाकत है।

इसीलिए हर मुसलमान को अपने ईमान की फिक्र करनी चाहिए। वह देखे कि उसका भरोसा किस पर है, उसकी इबादत किसके लिए है और उसकी उम्मीद और डर किससे जुड़ा है, कहीं ऐसा तो नहीं कि ज़बान से अल्लाह को एक मानता हो, लेकिन दिल में किसी और के सामने ऐसी उम्मीद या डर रखता हो जो सिर्फ अल्लाह के लिए होना चाहिए तौहीद का तकाजा है कि बंदा हर तरह के

शिर्क से बचे और अपने रब से अपना रिश्ता मजबूत करे।

सहाबा-ए-किराम रज़ि० अन्हुम अजमईन की जिंदगी से हमें यह भी सबक मिलता है कि उनकी तवज्जो हमेशा असल और बुनियादी बातों पर होती थी, कि जन्नत कैसे हासिल हो जहन्नम से कैसे बचा जाए कौनसा अमल अल्लाह को पसंद है और कौनसी चीज़ इंसान को हलाकत की तरफ ले जाती है ऐसे सवाल पूछते थे। वे इधर-उधर की बातों में नहीं उलझते थे बल्कि लुब्बे- लुबाब और मरकजी बात पर अपनी तवज्जो रखते थे। हमें भी उनसे इबरात हासिल करनी चाहिए और उनके नकश-ए-क़दम पर चलना चाहिए। अपनी जिंदगी में यह देखना चाहिए कि हमारी सबसे बड़ी फिक्र क्या है और क्या हम अपने ईमान तौहीद और आखिरत की कामयाबी को वह अहमियत दे रहे हैं जो देनी चाहिए।

दुनिया की जिंदगी में इंसान बहुत-सी बातों में उलझ जाता है, छोटी-छोटी बातों पर बहस अपनी राय की जिद आपसी खींचतान और ऐसी चीज़ों में जिंदगी गुज़ार देना जिनका आखिरत से कोई ताल्लुक नहीं उसे असल मकसद से दूर कर सकता है। सच्चे मोमिन की सबसे बड़ी फिक्र यह होनी चाहिए कि उसका ईमान सलामत रहे उसकी तौहीद साफ रहे और

शेष पृष्ठ.....22...पर

आज़ाद हिन्दुस्तान

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

देश की आज़ादी के लिए हम भारत वासियों ने एक जुट हो कर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक लम्बा संघर्ष किया, हज़ारों की संख्या में भारत वासी फाँसी के फन्दों पर झूल गये, और बन्दूक की गोलियों और तोप के गोलों का निशाना बने, ये स्वतंत्रता संग्राम लगभग 200 वर्षों तक चला, यहां तक कि 15 अगस्त 1947 ई० को स्वतंत्रता का सूरज उदय हुआ और देश वासियों के चेहरे खिल उठे और दिल्ली के लाल किले पर भारतीय तिरंगा लहराया गया।

ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतिनिधि और अंतिम वायसरॉय लार्ड माउन्ट विटेन देश की आज़ादी और देश के विभाजन का प्रवाना एक साथ लेकर आया जिसके फलस्वरूप हिन्दुस्तान जैसा विशाल और संयुक्त देश दो भागों पाकिस्तान, हिन्दुस्तान के रूप में विभाजित हो गया, ये अंग्रेज़ों की “डिवाइड एण्ड रूल” पालिसी के अन्तर्गत हुआ, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद अकेले व्यक्ति

थे जिन्होंने इसका विरोध किया, मौलाना आज़ाद शुरु से हिन्दू मुस्लिम और देश की एकता के प्रचारक और समर्थक थे जिसको वह अपने भाषणों में प्रभावशील शैली में कहते रहते थे, मौलाना आज़ाद कई साल तक कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रहे, कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन 15 सितम्बर 1923 ई० दिल्ली में अपने अध्यक्षीय भाषण में जो कुछ कहा वह प्रस्तुत है: “आज अगर एक फरिश्ता आसमान की बदलियों में से उतर आए और दिल्ली के कुतुब मीनार पर खड़ा होकर ऐलान कर दे कि स्वराज्य 24 घण्टे के अन्दर मिल सकता है बशर्ते कि हिन्दुस्तान, हिन्दू मुस्लिम एकता से दस्तबरदार हो जाये तो मैं स्वराज से दस्तबरदार हो जाऊँगा, मगर एकता से दस्त बरदार न हूँगा, क्योंकि स्वराज मिलने में यदि देरी हुई तो ये हिन्दुस्तान का नुक़सान होगा, यदि हमारी एकता जाती रही तो ये मानव जगत का बड़ा नुक़सान होगा” मौलाना आज़ाद की ये

दूरदर्शिता और सोच थी जो देश और देश वासियों के हित में थी परन्तु राजनैतिक नेताओं और पार्टियों ने अपने सियासी स्वार्थ के लिए मौलाना आज़ाद के इस प्रस्ताव और दृष्टिकोण की उपेक्षा की और उसका समर्थन नहीं किया देश विभाजित हो गया जिसके परिणाम में लाखों इन्सानों का रक्तपात और नरसंहार हुआ, और बड़ी संख्या में लोगों को अपना घरबार छोड़ कर पलायन करना पड़ा जिसका वर्णन एक कष्टदायक और दुख भरी दास्तान है। देश की आज़ादी के बाद देश में बहुत ही कष्टदायक और शोक जनक घटनाएं घटीं जिनमें सर्व प्रथम 30 जनवरी 1948 ई० को महात्मा गाँधी की हत्या, उसके बाद बाबरी मस्जिद की शहादत, फिर देश के विभिन्न भागों में सामप्रदायिक दंगे हुए। आज़ाद हिन्दुस्तान में जो लोग देश में शान्ति और एकता को पसन्द नहीं करते थे उन्होंने राष्ट्र पिता मोहन दास करमचन्द गाँधी की हत्या कर दी, दुनिया

जानती है कि स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गाँधी का क्या योगदान था, वह शान्ति और अहिंसा के वाहक थे, उसी समय ये बात सुनिश्चित हो गई कि स्वतंत्र भारत, भविष्य में गाँधी जी की नीतियों पर नहीं चलेगा अब भारत वासी उन्हें केवल चित्रों में देखेंगे। ये बहुत बड़ी विडंबना है।

राष्ट्र पिता की हत्या के बाद साढ़े चार सौ वर्ष पुरानी बाबरी मस्जिद चालीस हजार कार्य सेवकों द्वारा शहीद कर दी गई उन कार्य सेवकों को पूरी सुरक्षा के साथ उनके घरों तक पहुंचा दिया गया, हालांकि राज्य सरकार और केन्द्र सरकार दोनों सरकारों ने वचन दिया था कि मस्जिद को कोई नुकसान नहीं होगा, ये लोग परिक्रमा करके चले जाएंगे, मुख्य मंत्री उ०प्र० कल्याण सिंह ने वचन के साथ हलफ़ नामा भी लगाया जिसकी अवज्ञा में उन्हें 2 घण्टे की अलामती सज़ा भी मिली केन्द्रीय सरकार ने मस्जिद की सुरक्षा के लिए रिज़र्व पुलिस भेजी प्रन्तु उसको अयोध्या से 25 किलो मीटर दूर रहने का आर्डर था।

लगभग 6 घण्टों में सैकड़ों साल पुरानी मस्जिद

शहीद कर दी गई, देश और विदेश में भूंचाल आ गया, अयोध्या नगर में बहुत से मुसलमानों को ज़िन्दा जला दिया गया 200 से अधिक मुस्लिम घरों को जला कर खाक कर दिया गया, इस ऐतिहासिक घटना के अवसर पर देश विदेश के मीडिया वाले मौजूद थे जिन पर पूरी तरह आक्रमण हुआ और उनके उपकरणों को तोड़ दिया गया, मीडिया वाले अपनी दुरदशा बताने और दिखाने के लिए दिल्ली आदर्णीय राष्ट्रपति की सेवा में आये, इस शर्मनाक और दुखदाई घटना, से प्रभावित हो कर उस समय के राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने 6 दिसंबर 1992 की रात को आल इण्डिया रेडियो से अपने संबोधन में कहा कि आज की तारीख में अयोध्या की सरज़मीन पर जो घटना घटी वह गुण्डा गर्दी थी, इसके साथ साथ उस समय के प्रधान मंत्री पी०वी० नरसिम्ह राव ने बयान दिया कि मस्जिद जहां थी वहीं मस्जिद बनेगी, मस्जिद को तोड़ने और हटाने का कारण ये बताया जाता है कि वहां पर राम मन्दिर था जिसको गिराकर मस्जिद बनाई गई, इसकी जानकारी के लिए बहुत गहराई

से मस्जिद की बुनियादें खोदी गई बड़ा अनुसंधान और प्रयास हुआ परन्तु सफलता न मिली, जज साहब ने बड़े विश्वास से ये बात कही थी कि आस्था की बुनियाद पर जजमेन्ट नहीं होगा बल्कि क़ानूनी और ज्ञानात्मक प्रमाणों के आधार पर जजमेन्ट होगा, 27 वर्षों तक खोज हुई परन्तु मन्दिर की बुनियादों का कोई प्रमाणित सुबूत न मिला मजबूरन आस्था के आधार पर जजमेन्ट आया जो न्याय पूर्ण नहीं था।

डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर और उनके सहयोगी कितने विद्वान और देश प्रेमी थे जिन्होंने एक जात और एक धर्म को सामने रख कर संविधान नहीं बनाया बल्कि समाज के हर वर्ग ऊँची जात वाला या नीची जात वाला हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई किसी धर्म का अनुयाई हो, भारती संविधान की नज़र में सबका सम्मान है और मनुष्य के रूप में समानता के साथ सबको मानव अधिकार प्राप्त है। यदि कोई व्यक्ति बुरे काम करता है या समाज में बुराई फैलाता है जिससे शान्ति और एकता भंग होती है तो उससे घृणा करो, देश को आज़ाद हुए

80 साल हो रहे हैं अभी तक हिन्दू मुस्लिम और मस्जिद मन्दिर के झागड़े समाप्त नहीं हो रहे हैं बल्कि हर दिन इसमें इज़ाफ़ा ही हो रहा है, ये सब सियासी लीडरों का खेल है जो इन्सानि लाशों पर सियासत करते हैं, वह अपने वोटों की गिनती बढ़ाने, लोक सभा और राज्य सभा की सीटें प्राप्त करने के लिए हिन्दू मुस्लिम, मन्दिर मस्जिद के मसाएल खड़े करते रहते हैं, स्वतंत्रता संग्राम में सफलता का रहस्य हिन्दू मुस्लिम एकता और आपसी मेल मिलाप था क्या अच्छा होता कि देश स्वतंत्र होने के बाद और अधिक भाई चारे और मेल मिलाप की ओर अग्रसर होता।

बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद ये ख्याल हो रहा था कि अब देश में सुकून और शान्ति रहेगी अब मस्जिद के नाम पर कोई झागड़ा नहीं होगा, लोग आराम से रहेंगे, लेकिन दो तीन साल से मस्जिद गिराने की फिर लहर चलने लगी है हालांकि 1991 ई0 में इबादतगाहों से संबंधित एक्ट बन कर पास हो चुका है, कि देश की आज़ादी 1947 से पहले जो इबादत गाहें और

पूजा स्थल बने थे उन्हें नहीं तोड़ा जाएगा, इसके बावजूद इसी साल बनारस की अजाएब शाही मस्जिद और सहारनपुर कलेक्ट्रेट की मस्जिद तोड़ी गई, दो तीन साल पहले फ़तेहपुर तहसील बाराबंकी की मस्जिद तोड़ कर मलबा मलयानी नदी में फेंक दिया गया।

मस्जिदों को ध्वस्त करना, नमाज़ों और अज़ानों पर प्रतिबन्ध लगाने का कल्चर देश और देशवासियों के हित में नहीं है। ऐसे वातावरण और माहौल में “सबका साथ, सबका विकास सबका विश्वास” का नारा अर्थहीन और खोखला है। जो लोग लड़ाई दंगों पर यकीन रखते हैं वह भारतीय संविधान के विरोधी हैं, संविधान की विशेषता सबको एक साथ लेकर चलना है।

आज़ाद हिन्दुस्तान के अन्तर्गत जो कुछ मैंने लिखा या कहा है वह वर्तमान काल की एक झलक है, आज़ादी के बाद हमारे देश में जो साम्प्रदायिक दंगे हुए उनकी एक लंबी सूची है रावणकीला जमशेदपुर के दंगों पर देश के एक बड़े नेता जय प्रकाश नारायण ने दिल्ली की पार्लियामेंट में रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा था

“अत्याचार की सीमाएं टूट गईं” उसी ज़माने में भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू लखनऊ आए और बेगम हज़रत महल पार्क में स्पीच देते हुए कहा रावणकीला जमशेदपुर के दंगों में जो जुल्म और बर्बरता हुई उससे हमारा सर शर्म से झुक गया उन साम्प्रदायिक छोटे बड़े दंगों की संख्या एक हजार से कम नहीं, कष्ट जनक बात ये रही कि दंगाइयों को खुली छूट रही, शासन और प्रशासन तमाशाई बना रहा।

अब तक लड़ाई झगड़े की बातें रहीं, आइये अब सभ्यता और इंसानियत की बातें कर लें, हम मनुष्य हैं हमें मानवता का माहौल बनाना चाहिए, हम एक गाँव में गये जिसका नाम “बाबा का पुरवा” था, वहां मस्जिद और मन्दिर एक ही जगह था, उनके दरवाज़े, आमने सामने थे, इमाम साहब गाँव के बच्चों को कुरआन शरीफ़ पढ़ा रहे थे, देख कर खुशी हुई, हमने पूछा कि आप लोग मेल मुहब्बत से रहते हैं झगड़ा तो नहीं करते, उन्होंने बताया कि इस गांव में कभी झगड़ा नहीं हुआ हम चाहते थे कि मन्दिर के पुजारी

साहब से मुलाकात कर लें लेकिन वह मौजूद नहीं थे। इस प्रेम व्यवहार की हमारे दिल में बड़ी कद्र हुई आज देश को इसी चीज़ की ज़रूरत है।

इसी संदर्भ में हम आपको उ०प्र० की राजधानी लखनऊ नगर के एक बड़े हिन्दू घराने का वाकिया सुनाते हैं, वह पंडितों का घराना था उस घराने में एक पढ़ी लिखी विद्वान महिला स्वरूप कुमारी बख्शी जी थीं जो उ०प्र० सरकार की शिक्षा मंत्री थीं। श्रीमती बख्शी जी (भूत पूर्व शिक्षा मंत्री उ०प्र०) के पिता पंडित ब्रदी नाथ शंगलू थे जो बहुत बड़े इतिहासकार और साहित्यकार थे, अपनी बेटी (शिक्षा मंत्री) की कोठी में निवास करते थे। कोठी के निचले तल में श्रीमती बख्शी जी अपने मंत्री मंडल के पूरे ताम झाम के साथ रहतीं थीं, उनके पिता पंडित ब्रदी नाथ शंगलू कोठी के ऊपरी तल पर रहते थे, पंडित जी इल्म व अदब के बड़े दिल दादह (प्रेमी) थे, इसलिए हम जैसे लोग जो उर्दू फ़ारसी से लगाव रखते हैं उनके पास शाम के समय जब तब जाते थे। मग़रिब की नमाज़ पढ़ने के लिए उठ जाते, कभी कभी पंडित जी कहते देर हो

गई है, जमात नहीं मिलेगी, नमाज़ का इन्तिज़ाम यहीं हो जायेगा, सफ़ेद धुली हुई चादरें नमाज़ पढ़ने के लिए, वजू करने का पानी मौजूद होता, कई लोग होते, शिक्षा मंत्री की कोठी में जमात के साथ नमाज़ पढ़ लेते थे, न पुलिस हमारा पीछा करती, न हमारे ख़िलाफ़ एफ०आई०आर० होती, कितना शान्ति पूर्ण और सुकून का ज़माना था।

दो साल पहले लखनऊ के एक मुस्लिम महल्ले में शाम के समय जाना हुआ, शाम को दो नमाज़ें होती हैं एक सूरज डूबने से पहले अस्त्र की नमाज़, दूसरी सूरज डूबने के बाद मग़रिब की नमाज़ दोनों नमाज़ों के समय मस्जिदों से अज़ान की आवाज़ नहीं सुनाई दी, लोगों से अज़ान की आवाज़ न आने का कारण पूछा तो मालूम हुआ कि आज इस क्षेत्र में मुख्य मंत्री जी का प्रोग्राम चल रहा है इसलिए पुलिस ने मस्जिदों से लाउड स्पीकर उतरवा दिए हैं।

अज़ान क्या है, उसके कहने का उद्देश्य क्या है इसको समझ लेने की ज़रूरत है पहली बात यह है कि नमाज़ का अमल एक निश्चित समय पर होता है समय आगे पीछे

नहीं हो सकता है अज़ान एक इत्तिला और सूचना है कि नमाज़ पढ़ने का समय हो गया है इसके साथ नमाज़ की ओर बुलावा भी है अज़ान केवल चार पाँच मिनट का अमल है इससे किसी को कष्ट नहीं होना चाहिए, कष्ट इससे होता है कि घण्टों डीजे बज रहा है, कान के पर्दे फटे जा रहे हैं जुलूस पर जुलूस निकल रहे हैं, स्कूल जाने वाले बच्चे परेशान हो रहे हैं अस्पताल जाने वाले मरीज़ परेशान हो रहे हैं वहां पर पुलिस की ज़रूरत है, कि शोर को रोके और रास्ते की भीड़ पर कन्ट्रोल करे, ताकि पब्लिक अपनी अपनी डियुटी पर पहुंचे, अज़ान और नमाज़ पर पुलिस की भाग दौड़ पर और एफ०आई०आर० पर अंग्रेज़ों के शासन काल के एक पुराने और प्रसिद्ध शाएर “अकबर इलाहाबादी” का शेर याद आ रहा है आप भी सुन लीजिए—
*रकीबों ने रपट लिखवाई है,
जा जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है,
खुदा का इस ज़माने में॥*



इस्लाह और आत्म-मंथन: हर व्यक्ति की आवश्यकता

(मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी)

सच्चाई यह है कि सुधार और आत्म-सुधार का यह कार्य पैगम्बरों का कार्य है। एक नबी की ज़बान से यह बात कहलवाई जा रही है:—

अनुवाद: "मैं जहाँ तक मेरे बस में है, सुधार चाहता हूँ और मेरी सफलता केवल अल्लाह की ओर से है।"

आगे फरमाया:— "मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और उसी की ओर लौटता हूँ।"

इस्लाह की आवश्यकता हर व्यक्ति को है:—

इस्लाह और सुधार की आवश्यकता हर खास-ओ-आम को है। हर विद्यार्थी को इसकी आवश्यकता है, हर आलिम को, हर शैख को और हर सामान्य व्यक्ति को भी। व्यापारी और कारोबारी भी इससे बेनियाज नहीं हो सकते।

जो व्यक्ति अल्लाह को मानता है, अल्लाह के रसूल सल्ल० को मानता है और उन्हें आखिरी नबी स्वीकार करता है, उसकी जिम्मेदारी है कि वह अपना जायज़ा ले और अपनी ज़िंदगी के बारे में सोचे कि हमसे कहाँ-कहाँ गलतियाँ हो रही हैं।

गलतियाँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं। समाज में अलग-अलग वर्ग हैं और हर वर्ग से एक ही प्रकार की गलती नहीं होती। शैतान भी इतना नासमझ नहीं है कि हर व्यक्ति को एक ही तरीके से बहकाए।

जब शैतान किसी व्यक्ति के पास आता है तो उसकी स्थिति और उसके स्तर के अनुसार उससे बात करता है। यदि वह किसी बड़े शैख के पास जाएगा तो उससे यह नहीं कहेगा कि ज़िना करो या चोरी करो। वह जानता है कि यह व्यक्ति इन कामों को नहीं करेगा।

इसलिए वह ऐसे रास्ते तलाश करता है जिनसे व्यक्ति को स्वयं भी पता नहीं चलता कि उससे कहाँ गलती हो रही है। इसीलिए कहा जाता है कि इस्लाह और लाभदायक मार्गदर्शन से कोई व्यक्ति बेनियाज नहीं है।

यदि कोई यह समझने लगे कि मैं बड़ा बुजुर्ग हो गया हूँ, बड़ा आलिम हो गया हूँ या बड़ा शैख हो गया हूँ, इसलिए अब मैं खतरे से बाहर हूँ तो

याद रखिए, यही सोच उसे खतरे में डाल देती है।

इमाम अहमद रह० का आत्म-मंथन:—

हजरत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह का जो स्थान और सम्मान है, वह पूरी उम्मत जानती है। उनके बारे में इतिहास में आता है कि जीवन के अंतिम समय में शैतान आया और उसने कहा:— "आप बच गए।" उन्होंने पूछा: "कहाँ बच गया?"

जब तक ईमान पर खातिमा न हो जाए, कौन कह सकता है कि मैं सुरक्षित हूँ?

सोचिए! यह बात कौन कह रहा है? इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह।

उम्मत में सहाबा के बाद जिन महान व्यक्तित्वों के नाम लिए जाते हैं उनमें इमाम अहमद का नाम प्रमुखता से आता है। इतनी महान हस्ती भी यह समझती है कि जब तक ईमान पर मौत न आए, तब तक कोई व्यक्ति अपने बारे में निश्चिंत नहीं हो सकता।

मेरे भाइयो! शैतान हमारी ताक में है। वह हर व्यक्ति को उसकी स्थिति और उसके स्तर

के अनुसार गलत रास्ते पर ले जाना चाहता है।

इमाम इब्नुल जौज़ी रहमतुल्लाह अलैह की प्रसिद्ध पुस्तक 'तल्बीस-ए-इब्लीस' पढ़िए तो मालूम होगा कि शैतान की चालें कितनी विचित्र हैं। वह किस-किस तरह लोगों को धोखा देता है, कहाँ से वार करता है और किस प्रकार अच्छे काम करने वालों के भीतर भी खराबियाँ पैदा कर देता है।

शैतान अच्छे काम के माध्यम से भी बहकाता है:—

एक घटना मुझे किसी ने सुनाई। एक विद्यार्थी रोज अपने घर से मदरसे जाता था। रास्ते में एक दिन उसने एक बुजुर्ग को बैठे देखा। उसने सलाम किया और आगे बढ़ गया।

दूसरे दिन फिर उसी बुजुर्ग को देखा। सलाम हुआ। बुजुर्ग ने पूछा, "बेटा! कैसे हो?" धीरे-धीरे कई दिनों तक मुलाकात होती रही और परिचय बढ़ता गया।

कुछ दिनों बाद बुजुर्ग ने पूछा, "बेटा! तुम क्या करते हो?"

उसने कहा, "मैं विद्यार्थी हूँ और दीन का ज्ञान प्राप्त करता हूँ।"

बुजुर्ग ने कहा, "मेरी राय है कि तुम पहले कुरआन

मजीद हिफ़्ज कर लो। उसके बाद शिक्षा भी पूरी हो जाएगी।"

विद्यार्थी को यह सलाह बहुत अच्छी लगी। उसने सोचा कि कुरआन मजीद याद करने से बढ़कर और क्या अच्छी बात हो सकती है!

लेकिन उसने कहा कि मैं अपने उस्ताद से पूछ कर निर्णय लूँगा।

जब उसने अपने उस्ताद से बात की तो वह बड़े समझदार और दूरदर्शी व्यक्ति थे। उन्होंने तुरंत कहा:

"बेटा! वह शैतान है। वह तुम्हें पढ़ाई छोड़कर हिफ़्ज की ओर लगाना चाहता है। यदि तुम अभी अपनी शिक्षा छोड़ दोगे तो संभव है कि न हिफ़्ज पूरा कर पाओ और न अपनी शिक्षा पूरी कर सको।"

उन्होंने कहा:—

"तुम्हें हिफ़्ज करना है तो बाद में कर लेना, लेकिन अभी अपनी शिक्षा पूरी करो।"

यह घटना हमें बहुत बड़ी बात सिखाती है:— शैतान कभी-कभी अच्छे काम का सुझाव देकर भी व्यक्ति का रास्ता बिगाड़ देता है।

इसलिए केवल यह देखना पर्याप्त नहीं कि कोई काम देखने में अच्छा है यह भी देखना चाहिए कि वह हमारे लिए इस समय सही और

उचित है या नहीं।

दूसरों की कमियाँ देखने से पहले अपना जायजा लें:—

लोग धोखा खाते हैं और कभी-कभी बहुत अच्छे लोग भी शैतान के धोखे में आ जाते हैं।

शैतान दीन का काम करने वालों को भी बहकाता है। वह उनके भीतर अहंकार, दिखावा और अपने आपको दूसरों से श्रेष्ठ समझने की भावना पैदा करता है।

वह कहता है:— "तुम बहुत काम कर रहे हो। फलौं व्यक्ति इतना काम नहीं कर रहा। फलौं कम कर रहा है और तुम अधिक कर रहे हो।"

जबकि वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने जिस व्यक्ति को जितनी क्षमता और जितनी तौफीक दी है, वह उसके अनुसार काम कर रहा है।

तुम्हारा काम यह है कि तुम अपनी जिम्मेदारी निभाओ और जितना कर सकते हो, उतना करो। यदि हर व्यक्ति अपना जायजा लेना शुरू कर दे तो परिस्थितियों का सुधरना बहुत कठिन नहीं है। हमारी बड़ी समस्या यह है कि हमें दूसरों की आँखों का तिनका दिखाई देता है, लेकिन अपनी आँख का शहतीर दिखाई नहीं देता। हम अपने काम को सही समझते हैं, लेकिन दूसरों के

काम में तरह-तरह की कमियाँ निकालते रहते हैं। इसी से समाज में विवाद, मतभेद और विघटन पैदा होता है। हर व्यक्ति दूसरों के पीछे पड़ा रहता है और अपने बारे में नहीं सोचता कि मैं क्या कर रहा हूँ? मुझसे क्या कमी हो रही है? आज यह हमारे समय की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है।

हमारी वास्तविक जिम्मेदारी क्या है?

यदि हममें से हर व्यक्ति यह सोचे कि हमारे यहाँ जो काम हो रहा है, हमारी जो जिंदगी है, उसमें क्या-क्या कमियाँ हैं? हम कहाँ-कहाँ गलती कर रहे हैं? हम अपनी जिम्मेदारी को किस हद तक निभा रहे हैं? चाहे वह मदरसा चलाने वाला हो, मदरसे में पढ़ाने वाला हो, मदरसे में पढ़ने वाला हो, किसी खानकाह से जुड़ा व्यक्ति हो, व्यापारी हो या किसी दूसरे काम में लगा हुआ हो हर व्यक्ति को अपना जायज़ा लेना चाहिए।

अल्लाह ने हमें अपने नबी सल्ल० की उम्मत में पैदा किया है। हमारी जिम्मेदारी क्या है? हमें कैसी जिंदगी अपनानी चाहिए? आज उम्मत किस दिशा में जा रही है? अल्लाह हमसे क्या चाहता है? और उसके रसूल सल्ल० ने हमारे

सामने कैसी जिंदगी का नमूना रखा है?

अल्लाह ने स्पष्ट फरमाया:—

“निश्चय ही तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० की जात में उत्तम आदर्श है।”

प्रश्न यह है कि क्या हमने उस आदर्श को अपनी जिंदगी में अपनाया है?

हमारी सफलता की मूल बुनियाद यही है कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० की जिंदगी को समझें, उसका अध्ययन करें और उसे अपनी जिंदगी के लिए प्रकाश का स्रोत बनाएँ।

यदि हमने सीरत का सही अध्ययन नहीं किया और उसकी रोशनी में अपनी जिंदगी को आगे नहीं बढ़ाया तो वास्तविक सफलता प्राप्त करना कठिन है।

मुस्लिम समाज की बिगड़ती स्थिति:—

आज मुस्लिम समाज को देखिए। मुस्लिम मोहल्लों में जाइए तो ऐसी-ऐसी खराबियाँ बढ़ती जा रही हैं कि कहीं से यह दिखाई ही नहीं देता कि हम मुसलमान हैं। कहीं यह दिखाई नहीं देता कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की पवित्र जिंदगी का कोई प्रतिबिम्ब हमारी जिंदगी में मौजूद है।

इसका कारण क्या है?

हम अपनी कमियों को देखने के लिए तैयार नहीं हैं। हमें दूसरों की कमियाँ दिखाई देती हैं। हम भाषण करते हैं कि शादियों में फिजूलखर्ची नहीं होनी चाहिए, लेकिन जब अपनी शादी का अवसर आता है तो न जाने कितनी फिजूलखर्ची कर बैठते हैं। दूसरों को रोकते हैं, लेकिन अपना जायज़ा नहीं लेते। हालाँकि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्ति स्वयं अपना हिसाब करे।

हदीस में आता है:—

“समझदार वह है जो अपना आत्म-मूल्यांकन करे और मृत्यु के बाद के जीवन के लिए तैयारी करे।”

सिर्फ इच्छाओं से सफलता नहीं मिलती:—

कई लोग अपनी इच्छाओं पर जीवन बिताते हैं और अल्लाह से बड़ी-बड़ी उम्मीदें रखते हैं कि हम तो मुसलमान हैं, अल्लाह हमारी मदद कर देगा। लेकिन अल्लाह तआला ने स्पष्ट फरमाया:—

“यह तुम्हारी इच्छाओं और कामनाओं पर निर्भर नहीं है और न अहले-किताब की इच्छाओं पर।” जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा, उसे उसके अनुसार

परिणाम मिलेगा। आज हम दुनिया के हालात का रोना रोते हैं। हम भी उनका उल्लेख करते हैं। लेकिन मेरा कहना यह है कि जो हम कर सकते हैं, उसे करने के लिए हम तैयार नहीं हैं और जो हमारे बस में नहीं है, उसके बारे में हम रोते रहते हैं। दूसरों की जिम्मेदारियों का उल्लेख करते हैं, लेकिन अपनी जिम्मेदारी को भूल जाते हैं।

समाज की बिगड़ती हालत और हमारे कर्म:-

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है:- "धरती और समुद्र में जो बिगाड़ पैदा हुआ है, वह लोगों के अपने कर्मों के कारण है।" हर वस्तु में अल्लाह ने एक विशेष गुण रखा है। आग जलाती है और पानी प्यास बुझाता है। इसी प्रकार अच्छे कर्मों में भी अल्लाह ने विशेष प्रभाव रखा है और बुरे कर्मों में भी। अच्छे कर्म जीवन में बरकत लाते हैं और अल्लाह रास्ते आसान करता है। बुरे कर्मों के भी बुरे परिणाम होते हैं। इसलिए हमें यह देखना चाहिए कि आज हमारे ऊपर जो समस्याएँ और परेशानियाँ हैं, उनका कारण क्या है? हम तरह-तरह के कारण खोजते हैं, लेकिन कुरआन हमें यह समझाता है

कि मनुष्य के कर्मों का उसके जीवन और समाज पर प्रभाव पड़ता है।

इस्लाम की सही तस्वीर अपने आचरण से पेश करें:-

आज हमारा देश और यहाँ रहने वाले लोग अनेक प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहे हैं। मेरा विचार है कि इस स्थिति में मुसलमानों की भी बड़ी जिम्मेदारी है। यदि हमने सही जीवन अपनाया होता, अपना जायजा लिया होता, लोगों के सामने अल्लाह के रसूल सल्ल० का सही आदर्श प्रस्तुत किया होता और हमारी जिंदगी ऐसी होती कि लोग हमारे आचरण को देखकर इस्लाम को समझते, तो शायद इस्लाम के बारे में पैदा होने वाली बहुत-सी गलतफहमियाँ पैदा न होतीं। लेकिन हम इसके लिए तैयार नहीं हैं। हम टिप्पणी करने के लिए तैयार हैं, कारण तलाशने के लिए तैयार हैं और दूसरों की जिम्मेदारियाँ गिनाने के लिए तैयार हैं लेकिन अपने वास्तविक काम को करने के लिए तैयार नहीं हैं। व्यक्ति, परिवार, मोहल्ला, शहर और समाज हर स्तर पर हमें अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

युवाओं की स्थिति और नशे की समस्या:-

आज युवाओं का क्या

हाल है? वे किस दिशा में जा रहे हैं? नशे की समस्या कोई मामूली समस्या नहीं है। यह बीमारी धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। ऐसे लोग भी दिखाई देते हैं जो नमाज के पाबंद हैं, लेकिन उसके साथ नशे की लत में भी पड़े हुए हैं। पहले मुस्लिम समाज में नशे का यह रूप बहुत कम दिखाई देता था, लेकिन आज यह समस्या बढ़ रही है। इसके परिणामस्वरूप आत्महत्या जैसी घटनाएँ भी सामने आ रही हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि हमने अपनी जिंदगी को परिस्थितियों के हवाले कर दिया है। जिस दिशा में समाज का बहाव हमें ले जा रहा है, हम उसी दिशा में बहते जा रहे हैं। हालाँकि अल्लाह ने हमें केवल बहने के लिए नहीं, बल्कि दिशा दिखाने और दूसरों को बचाने के लिए पैदा किया है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमारी और लोगों की मिसाल ऐसे पतिंगों से दी जो आग की ओर गिरते हैं, जबकि आप सल्ल० उन्हें आग से बचाने का प्रयास करते हैं। आज हमारी स्थिति भी कुछ ऐसी हो गई है कि हम स्वयं उसी आग की ओर बढ़ते जा रहे हैं और कोई हमें रोकने वाला नहीं है।

जारी.....



इस्लाम ही क्यों?

मौलाना अब्दुरहीम नदवी

उस्ताद दारुल उलूम नदवतुल उलमा

इस्लाम एक संपूर्ण और विश्वव्यापी धर्म है, जिसे अल्लाह ने क़यामत तक के लिए चुना है। यह दुनिया में शांति और सुरक्षा की गारंटी देता है और हर प्रकार के अत्याचार व नाइंसाफी के खात्मे की घोषणा करता है। धरती से उपद्रव और अशांति को मिटाना इसका मुख्य कर्तव्य है। हजरत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक सभी पैगंबरों (ईशदूतों) को यही जिम्मेदारी सौंपी गई थी कि दुनिया में बसने वाले इंसानों को उनके रब (सच्चे मालिक) से जोड़ा जाए, और बंदों को बंदों की गुलामी से निकालकर एक अकेले अल्लाह की बंदगी में लाया जाए। क्योंकि इससे बड़ा कोई अत्याचार और नाइंसाफी नहीं हो सकती कि इंसान अपने पैदा करने वाले और असली मालिक से दूर हो जाए, उसका इनकार करे, या उसका जो हक बनता है उसे अदा न करे।

आज छोटी-छोटी कंपनियों के मालिक अपने कर्मचारियों (Employees) को इस बात की

इजाज़त नहीं देते कि वे कंपनी में रहते हुए किसी और के आदेश पर चलें या किसी और से संबंध रखें हालांकि इन मालिकों की अपनी असलियत क्या है, यह सभी जानते हैं। फिर वह ईश्वर, जिसने इंसान को एक तुच्छ बूंद से पैदा किया, जीवन भर उसके पालन-पोषण का जिम्मा लिया, उसकी सारी जरूरतों को पूरा करता है, हवा, पानी और भोजन देता है, सर्दी और गर्मी से बचाव के साधन जुटाता है वह यह कैसे सहन कर सकता है कि उसकी बनाई हुई दुनिया में उससे मुंह मोड़कर किसी और से दिल लगाया जाए, उसे छोड़कर किसी और की पूजा की जाए, या उसके आदेशों को तोड़कर किसी और की बात मानी जाए।

जाहिर है कि यह इस ब्रह्मांड का सबसे बड़ा अन्याय है। इसलिए इस्लाम अपने मानने वालों को इस बात का पाबंद बनाता है कि वे इस धरती पर केवल और केवल ईश्वर का कानून लागू करें।

यही सच्चे न्याय की मांग है और इसी में दुनिया की शांति छुपी है दुनिया का कोई दूसरा कानून इसकी गारंटी नहीं दे सकता।

इसकी वजह यह है कि यदि इंसानों के बनाए हुए कानून दुनिया में लागू होंगे, तो वे कानून बनाने वालों की सोच, उनकी कमज़ोरियों और उनके हालात से ज़रूर प्रभावित होंगे। इतिहास के पन्नों में अगर दुनिया के सभी कानूनों और जीवन-प्रणालियों का जायज़ा लिया जाए, तो यह सच्चाई पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है—

प्राचीन रोम और यूनान में जब कानून बने, तो उन्होंने केवल उच्च वर्ग और रसूखदार लोगों के अधिकारों की रक्षा की, जबकि कमजोर वर्ग और गुलामों पर होने वाले अत्याचारों को कानूनी रूप दे दिया।

आधुनिक युग में जब पूंजीपतियों ने कानून बनाए, तो अमीरों का पक्ष लिया गया और गरीबों का शोषण हुआ।

जब मजदूरों और

समाजवादियों ने इसके विरोध में साम्यवाद (कम्युनिज्म) का ढांचा खड़ा किया, तो उन्होंने इंसान की बुनियादी आजादी ही छीन ली, और आखिरकार वह व्यवस्था अपनी ही खामियों की वजह से बिखर गई।

तात्पर्य यह है कि जब भी इंसान कानून बनाएगा, तो कानून बनाने वाले वर्ग का प्रभाव उसमें साफ झलकेगा। अमीर बनाएंगे तो अमीरों की तरफदारी होगी, गरीब बनाएंगे तो उनकी सोच हावी होगी, महिलाएं बनाएंगी तो महिलाओं के, और पुरुष बनाएंगे तो पुरुषों के अधिकारों का अधिक ध्यान रखा जाएगा।

और यदि मान भी लिया जाए कि सभी वर्ग मिलकर कोई साझा कानून बना लें, तब भी वह पूरी दुनिया के लिए व्यावहारिक और निष्पक्ष नहीं हो सकता। क्योंकि दुनिया के हर कोने में रहने वालों के स्वभाव, उनकी वास्तविक जरूरतों और भविष्य की आवश्यकताओं को अगर कोई पूरी तरह जानता है, तो वह केवल और केवल ईश्वर की सत्ता है। उसके अलावा कोई ऐसा नहीं है जो ऐसा नियम बना सके जो हर दृष्टि से

इंसानों के कल्याण की गारंटी दे और दुनिया में न्याय व शांति स्थापित कर सके।

लेकिन जब कानून बनाने वाला स्वयं अल्लाह होगा, तो वह इन सभी मानवीय कमजोरियों और पक्षपातों से बहुत ऊपर होगा। उसके कानून में किसी प्रकार का भेदभाव या पक्षपात हो ही नहीं सकता।

और स्पष्ट है कि जब इतना निष्पक्ष कानून लागू होगा, तो उससे दुनिया में न्याय की स्थापना होगी और अन्याय का खात्मा तय है। यही इस धरती पर रहने वालों की सबसे बड़ी जरूरत है, और इसी को ध्यान में रखकर दुनिया के सारे कानून बनाए जाते हैं। इन कानूनों को लागू करने में बुनियादी तौर पर दो ही बातों का ध्यान रखा जाता है, न किसी पर जुल्म हो और न किसी का हक छीना जाए। दूसरे शब्दों में यह कि समाज से उपद्रव और बुराई का अंत हो, न्याय का बोलबाला हो, और हर उस रुकावट को गिरा दिया जाए जो इस रास्ते में बाधक बने।

लेकिन इंसानों के बनाए हुए अधूरे नियमों में न तो इसकी गारंटी दी जा सकती है और न ही यह संभव है। यह

विशेषता केवल ईश्वर के बनाए हुए कानून में ही है।

इसलिए, मुसलमान इसी पवित्र उद्देश्य को सामने रखकर पूरी मानव जाति से कहता है कि यह दुनिया ईश्वर की है और इसमें केवल ईश्वर का ही कानून लागू होना चाहिए, ताकि सच्ची शांति स्थापित हो, हर पीड़ित को न्याय मिले, और कोई किसी पर अत्याचार न कर सके। और इस न्याय व्यवस्था के रास्ते में यदि कोई अत्याचारी रुकावट बनेगा, तो उसे हटाया जाएगा, उस रुकावट को दूर करना इस्लामी सत्ता का कर्तव्य होगा। शांति और न्याय के मार्ग की हर बाधा को दूर करने के लिए संघर्ष करना मुसलमानों पर अनिवार्य है, और इसी को इस्लाम की शब्दावली में “जिहाद” कहा जाता है—जिसके नाम से आज लोग बिना सोचे-समझे बहुत डरते और नफरत करते हैं।

आज दुनिया की बड़ी-बड़ी महाशक्तियां किसी भी देश पर प्रतिबंध लगा देती हैं कि वह अमुक हथियार नहीं बना सकता। आखिर क्यों? वे कौन होते हैं किसी स्वतंत्र देश पर रोक लगाने वाले? लेकिन

जिस बात से वे इस प्रतिबंध को सही ठहराते हैं, वह यही नारा है कि "इससे विश्व शांति को खतरा है" वरना प्रत्यक्ष रूप से इसका कोई औचित्य नहीं, और यदि वह देश उनकी बात न माने, तो उसके खिलाफ बाकायदा सैन्य कार्रवाई तक की जाती है। आखिर क्यों? केवल इसलिए कि शांति की स्थापना और खतरे का खात्मा हर कीमत पर जरूरी माना जाता है।

लेकिन इस वास्तविक शांति की गारंटी केवल और केवल इस्लामी कानून के लागू होने में है, क्योंकि यह अल्लाह का बनाया हुआ जीवन-विधान है जो कुरआन और हदीस के रूप में पूरी तरह सुरक्षित और मौजूद है। दुनिया का कोई दूसरा धर्म आज ऐतिहासिक रूप से यह दावा नहीं कर सकता कि उसके पास जो धार्मिक ग्रंथ और जीवन-नियम हैं, वे ज्यों-के-त्यों (बिना किसी बदलाव के) ईश्वर के दिए हुए हैं, और अगर कोई जबानी दावा करे भी, तो उसका ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत करने में असमर्थ रहेगा।

इसलिए दुनिया के सामने जब यह बात रखी जाती है कि

इस्लाम की न्यायपूर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया जाए या उसके शांतिप्रिय कानून के अधीन रहा जाए, तो इसका वास्तविक उद्देश्य किसी का धर्म जबरन बदलवाना नहीं होता, बल्कि उद्देश्य यह होता है कि दुनिया से अन्याय को हर हाल में मिटाना और शांति व्यवस्था बनाए रखना अनिवार्य है। इसके लिए एक ऐसी जीवन-प्रणाली के अधीन होना जरूरी है जो हर प्रकार के पक्षपात, रंग-रूप, जाति-पाति, क्षेत्रवाद, ऊंच-नीच और नस्लीय भेदभाव से पूरी तरह मुक्त और ऊपर हो, और यह विशेषता इस्लामी कानून के सिवा दुनिया में किसी के पास नहीं है।

अतः हम पूरे विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि दुनिया के उद्धार और शांति का एकमात्र मार्ग इस्लाम ही है।

जिहाद का उद्देश्य कभी भी पूरी दुनिया को तलवार के बल पर मुसलमान बनाना नहीं है, बल्कि दुनिया को अत्याचार से मुक्त करके शांति और सुरक्षा का केंद्र बनाना है। और दुनिया शांति का घर उसी समय बन सकती है जब इसमें ईश्वरीय कानून का सर्वोच्च स्थान हो, चाहे लोग इस सत्य

को दिल से स्वीकार करके मुसलमान बन जाएं, या फिर इसकी न्यायपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था की छत्रछाया स्वीकार कर लें। इसके बिना दुनिया में उपद्रव, हिंसा और मार-काट का ही राज रहेगा जैसा कि इतिहास गवाह है कि पैगंबर हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने से पहले दुनिया में कैसा अंधेर और अत्याचार फैला था, और उनके आगमन तथा इस्लाम के शासन के बाद दुनिया ने कैसा बेमिसाल न्याय और शांति का माहौल देखा।

यही वह ऐतिहासिक और तार्किक कारण है दुनिया में इस्लामी कानून लागू करने का, वरना दावा तो हर कोई कर सकता है कि उसका धर्म या उसका कानून दुनिया में लागू किया जाए, लेकिन कोई यह गारंटी नहीं दे सकता कि उसके लागू होने से अत्याचार सचमुच खत्म हो जाएगा और शांति स्थापित हो जाएगी। यदि पूरे विश्वास और ऐतिहासिक प्रमाण के साथ कोई यह गारंटी दे सकता है, तो वह केवल और केवल इस्लाम है।



कश्ती डूब रही है

हक़ को पहचानने वाले पहचान रहे हैं

ई0 जावेद इक़बाल

“सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा” इस बात में न कभी कोई शक था और न आज कोई शक है, घृणा, नफ़रत और हिंसा के इस माहौल, महाकाल में। यह अलग बात है कि हमारे देश की 70 प्रतिशत जनता जिंदगी की बुनियादी ज़रूरतों से महरूम है। न उसके पास रहने की उचित व्यवस्था है और न खाने के लिए शुद्ध खाना, न पीने के लिए साफ पानी। यह 70 प्रतिशत जनता किसी तरह कच्चे पक्के मकान और झुग्गी झोपड़ी में गुज़र बसर करने पर मजबूर है। न बिजली की उचित व्यवस्था है, न पानी की, न उनके इलाके में पक्की सड़कें हैं और न पार्क वगैरह। कहने को तो इस आधुनिक काल में शहरों की सड़कें और पार्क रात भर रौशनी से जगमगाते हैं मगर दूसरी तरफ इन्हीं शहरों में गरीबों के इलाके अंधेरे में डूबे होते हैं। आज भी हमारे देश के अनेक गांव देहात ऐसे हैं जहां बिजली के तार नहीं पहुंच सके हैं, साफ पानी के लिए पानी की कोई व्यवस्था नहीं है, टंकियां नहीं हैं, पाइप लाइनें नहीं हैं, शौचालय नहीं हैं सड़कें नहीं हैं, हालांकि योजनाएं बहुत हैं, दावे बहुत हैं, लाखों लाख का बजट अलाट

होता है, सरकारी विज्ञापनों को देखें तो हर तरफ तरक्की ही तरक्की है, जबकि हकीकत यह है कि कोई काम समय पर नहीं होता, बगैर रिश्त के नहीं होता, मेयार के मुताबिक नहीं होता। खुदा ने हमारे देश को बेशुमार नेमतों से नवाजा है कोई कमी नहीं छोड़ी मगर हम भारतवासियों में नैतिक मान्यताओं का बड़ा अभाव है, हमारे अंदर अखलाकी गिरावट निचली सतह पर पहुंची हुई है। खुदगर्जी, बेईमानी, धोखाधड़ी, झूठ फरेब और मक्कारी इस हद तक फैली हुई है कि हम कोई काम अपने हितों को अनदेखा किए बिना नहीं करते। इस के लिए सारा दोष केवल आम जनता और कर्मचारियों का ही नहीं है बल्कि इसकी बड़ी जिम्मेदारी राजकीय व्यवस्था की है, शासन प्रशासन की है और सब से बड़ी जिम्मेदारी नेताओं की, मंत्रियों की, महामंत्रियों की है। लाखों लाख रुपए खर्च कर के सड़कें बनती हैं और पहली बरसात में ही बह जाती हैं, धंस जाती हैं। अब तो यह तक देखने में आया है कि उदघाटन के तुरंत बाद ही कई कई किलोमीटर की लम्बाई में सड़कें धंस गईं या बह गईं, पुल बनते हैं और शीघ्र ही उनका

कोई हिस्सा गिर जाता है, पानी की टंकियां बनाई जाती हैं और पहले ही भराव में लीक कर जाती हैं। गांव देहात में शौचालय बनाए जाते हैं मगर कहीं सैप्टिक टैंक नहीं बनता तो कहीं पानी की व्यवस्था नहीं होती। इस तरह की अनेक मिसालें हैं जो हमारे आपके सामने हर दिन आती रहती हैं। यह आज की कोई नयी कहानी नहीं है। आजाद भारत में सदा से यही हो रहा है। इसकी बुनियादी वजह है “हवस” लोभ—लालच, ज़्यादा से ज़्यादा दौलतमंद बनने की इच्छा। अगर ज़रूरत भर का माल हड़प कर इंसान हाथ रोक लेता, तो भी गनीमत था मगर यहां तो हवस इतनी बढ़ चुकी है कि मंत्री से लेकर संतरी तक, जज से लेकर पेशकार तक, अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों तक हर व्यक्ति अपनी अपनी अलमारियां, बैडरूम और तहखाने भरने के बाद गैराज और कंडों—भूसे के ढेर में नोटों की गड़ियां छुपा रहा हैं। यही वजह है कि लाख का काम हजार में निपटाया जाता है, नतीजे में सड़कें बह रही हैं, पुल गिर रहे हैं। क्या यही देश प्रेम है? हकीकत यह है कि देश प्रेम का बस ढिंडोरा पीटा जा रहा है

वरना हर व्यक्ति इस देश में अपने स्वार्थ साधने में लगा है। यदि सच्चा देश प्रेम होता तो आज स्वतंत्रता के 79-80 साल गुजरने पर गांव गांव में पक्की सड़कें होतीं, पानी की टंकियां होती, पाइप लाइनें होतीं, घर घर में बिजली होती, स्कूल कालेज होते, अस्पताल होते, देश का पैसा देश की जनता के हित में लग रहा होता तो हर तरफ सुख चैन होता, हर हाथ में व्यवसाय होता, नौकरी होती कारोबार होता, तब सरकार को 5 किलो मुफ्त अनाज बांटने की योजना न बनानी पड़ती अलबत्ता झूठी वाहवाही लूटने का मौका तब न मिलता।

हवस लोभ लालच की अनैतिक बीमारी ने मुल्क को सब कुछ होते हुए भी भूख के मामले में 102 वें पायदान पर पहुंचा दिया है। एक तरफ तो हमारे पास अनाज के भंडार भरे हैं, राशन बांटने की व्यवस्था भी है, जिसे नित नए सुधारों की जटिल प्रक्रिया ने जर्जर बना डाला है साथ ही धोखाधड़ी का यह हाल है कि सैकड़ों परिवारों को राशन नहीं मिल पाता, जिन को मिलता है उन्हें पूरा नहीं मिलता और घंटों लाइन में लग कर समय बर्बाद करना पड़ता है।

शिक्षा के महत्व से कौन वाकिफ नहीं, मगर गांव गांव स्कूल कालेज खोलने के बजाय मौजूद पुराने स्कूलों को बंद

किया जा रहा है। कहते हैं कि छात्र नहीं हैं, जबकि वजह यह है कि शिक्षक नहीं हैं। नई भर्तियां हो नहीं रहीं, पुराने रिटायर हो रहे हैं। शिक्षक ही क्या, हर विभाग का यही हाल है। ठेके पर अयोग्य गैर जिम्मेदार बेगारों को भरकर काम चलाया जा रहा है। जिन्हें बहुत कम भत्ता दिया जाता है, वेतन नहीं, महंगाई भत्ता नहीं, पेंशन तो पहले ही खत्म कर दी गई थी, बंधुआ मजदूर हैं जब चाहा निकाल बाहर किया, कोई पूछने वाला नहीं, कोई सुनने वाला नहीं। इस सब के पीछे भी हवस काम कर रही है। सरकारी सतह पर हवस इतनी बढ़ चुकी है कि नियम कानून और पालीसियां भी जनता के हितों को अनदेखा करके स्वयं अपने और अपने संबंधियों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनाई जा रही हैं।

मौजूदा वक़्त में एथेनाल पालीसी को ही ले लीजिए, गन्ने से एथेनाल बनाने पर इतना ध्यान दिया गया कि शकर की पैदावार कम हो गई, शकर की कीमतें 60-70 प्रतिशत बढ़ गई, जो देश कभी शकर का निर्यात करता था उसे अब आयात की नौबत आ गई। मगर कोई परवाह नहीं व्यापारी और अपने चहीतों के वारे न्यारे हो रहे हैं। 20-25 रुपए लीटर का एथेनाल पेट्रोल का हाथ पकड़ कर 100 के पार खिलखिला रहा है। जनता की फिक्र किसे है, वह मरे

मिटे या नरक में जाये। आगे कुछ और झलकियां देखिए, गैस और कच्चे तेल की तलाश के लिए समुद्र मंथन स्कीम के नाम पर हज़ारों करोड़ की धनराशि कुछ बड़े उद्योगपतियों को सौंपने की तैयारी है जबकि इस काम के लिए पब्लिक सेक्टर की सरकारी कम्पनी ONGC पहले से मौजूद है।

उत्तर प्रदेश के सभी बड़े शहरों को, कहा जा रहा है कि बुलेट ट्रेन से जोड़ा जाएगा, कोई उनसे पूछे यह बुलेट ट्रेन किसके लिए होगी, क्या गरीब आदमी को इसकी ज़रूरत है, 5 किलो मुफ्त अनाज पर पलने वाला व्यक्ति जिसे ज़िंदगी भर 100-200 किलोमीटर के दायरे में ही सफ़र करना होता है, क्या बुलेट ट्रेन में सफ़र कर सकेगा।

अवाम के नैतिक पतन और अज्ञानता का यह हाल है कि कांवड़ यात्रा जो एक धार्मिक उद्देश्य से की जाने वाली परंपरा है, इस यात्रा में शालीनता और गम्भीरता के साथ वैदिक मंत्रों का उच्चारण होना चाहिए था, जैसा कि पचास साठ साल पहले होता था मगर आज वर्तमान में अशलील गानों और डी0जे0 पर उछल कूद के साथ इस धार्मिक यात्रा को नफ़रत और हुड़दंग का जरिया बना दिया गया है। कई कई हफ़्तों के लिए सड़कें अवाम के लिए बंद कर दी जाती हैं, कांवड़ियों पर फूलों की बारिश

की जाती है, कोई शामत का मारा यदि रास्ता चलते किसी कांवड़ से छू भर जाता है तो उस पर लाठी डंडों से हमला कर दिया जाता है। दूसरी तरफ इस्लामी शिआर (प्रतीकों) से ऐसी नफरत है कि नमाज़ जैसी खामोशी से गम्भीरता पूर्वक एक कोने में अदा की जाने वाली इबादत भी गवारा नहीं है। नहीं कहा जा सकता कि यह रवैया नफरत के सबब है या फिर खौफ की वजह से है, क्योंकि सोचने समझने की सलाहियत रखने और गौर व फिक्र करने वाला तबका गम्भीरता पूर्वक एक खुदा की इबादत से प्रभावित हो सकता है।

लगभग पचास साल पहले मौलाना अली मियां रह0 ने एक जलसे में कहा था कि यह मुल्क तबाही के दहाने पर खड़ा है, क्यों खड़ा है, पैसे की लालच की वजह से, बेईमानी की वजह से, रिश्वत की वजह से और जात बिरादरी तथा धार्मिक उन्माद की वजह से। जिस तबाही का अंदेशा मौलाना रह0 ने पचास साल पहले ज़ाहिर किया था वह हकीकत बन कर आज हमारे सामने है। उस समय मुल्क तबाही के दहाने पर खड़ा था और आज मजधार में उसकी कश्ती हिचकोले खा रही है, डूब रही है। उस वक़्त मौलाना रह0 ने मुसलमानों को मुखातब करके

कहा था कि आप समन्दर के अंधेरों में रौशनी के मीनार की तरह हैं, रौशनी का मीनार हवाओं के थपेड़ों से डगमगाता नहीं है, वह हर हाल में अडिग खड़ा रहता है, भटके हुए को रास्ता दिखाता है। आप हिम्मत से काम लें, ईमानी सिफात, इस्लामी अख़लाक़ इंसानी हमदर्दी के जज्बे के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें। नफरती चिन्तू लाख इस्लामी शिआर पर पर्दा डालने की कोशिश करें, हक को वह कभी छुपा नहीं सकेंगे। याद करो कुरआन की वह बात जिसमें कहा गया है कि जब कश्ती डूबने लगती है तो हर किसी को खुदा की याद आती है और मदद के लिए सब मिलकर उसी को पुकारते हैं। अब कश्ती डूब रही है, मीनारे अपनी रौशनी बिखेरते रहें। मौत को सामने देख कर, पहचानने की सलाहियत रखने वाले मन ही मन हक को पहचान रहे हैं, वक़्त आने पर ऐलानिया पहचानेंगे। इशाल्लाह।



पृष्ठ.....08..का शेष

उसका खातिमा अच्छे हाल में हो। उसे बार-बार अपने आपसे पूछना चाहिए अगर आज मुझे अपने रब के सामने जाना पड़े तो क्या मैं ईमान की हालत में जाऊँगा?

कुरआन—ए—करीम ने कामयाबी का आखिरी पैमाना बहुत साफ़ बता दिया है: "पस

जो शरख़ आग से बचा लिया गया और जन्नत में दाखिल कर दिया गया वही असल में कामयाब हुआ।"

(आल—ए—इमरान: 185)

दुनिया में कामयाबी की बहुत—सी शकलें हो सकती हैं लेकिन असल कामयाबी यही है कि इंसान ईमान—ए—ख़ालिस के साथ अपने रब के सामने पहुँचे इसलिए तौहीद को अपने दिल की बुनियाद बनाए हर तरह के शिर्क से बचे ईमान के तकाज़ों के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारे और हमेशा इस फिक्र में रहे कि उसका आखिरी सफर ईमान और तौहीद के साथ हो यही जन्नत की राह है और यही असल कामयाबी है कि उसकी निगाह से उसकी आखिरी मंजिल कभी ओझल न हो। वह तौहीद को दिल की गहराइयों में बिठाता है, हर तरह के शिर्क से हमेशा दूर रहता है, नमाज़ को अपनी अमली बंदगी का खंभा बनाता है और सच्चाई के सामने आजिजी से झुककर चलता है। सच्चे राही की पूरी ज़िंदगी इसी हकीकत के गिर्द घूमनी चाहिए कि ईमान—ए—ख़ालिस के साथ खातिमा हमेशा रहने वाली जन्नत में जाने का सबब है और शिर्क की हालत में मौत हमेशा के लिए जहन्नम में जाने का सबब है।

आमीन।



सीरते नबवी, मक्का से मदीना तक

डॉ० नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

मदीने के जो लोग इस्लाम लाये उनको अल्लाह ने अन्सार अर्थात् मददगार की उपाधि दी। इन लोगों ने मक्का से जो भी मुसलमान अपना घर-बार और जायदाद छोड़ कर आया, उनको अपना भाई बना लिया यानी उनको अपनी जायदाद में हिस्सा दिया और अपने कारोबार में शरीक किया।

मक्का में तो मुसलमानों के एक ही दुश्मन थे अर्थात् मक्का के काफिर। मदीने आकर उनके तीन दुश्मन हो गये। मक्का के काफिर, मदीने के मुनाफिकीन (कपटी) लोग और हिजाज़ के यहूदी। मुसलमानों को इन तीनों ताकतों का एक साथ मुकाबला करना और उनमें से हर एक को रास्ते से हटाने के लिए अलग-अलग रणनीति बनानी पड़ी।

इधर जो मुसलमान मक्का छोड़कर मदीने चले आये थे, उनके घरों और प्रापर्टी पर काफिरों ने कब्जा जमा लिया और सबसे बड़ी बात कि उनके लिए हज के दरवाजे बन्द कर दिये गये तथा जो गरीब मुसलमान या छोटे बच्चे अथवा औरतें मदीने न आ सकीं उन पर पहरा बैठा दिया कि वह

जाने न पायें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों के इस व्यवहार को बदलने के लिए यह किया कि उनके व्यापारियों को जो शाम (सीरिया) आते-जाते थे, दो-दो, चार-चार और कभी दस-बारह मुसलमानों को भेज कर दौड़ाने लगे ताकि वह अपने व्यापार के खातिर मुसलमानों से सुलह कर लें। लेकिन वह जिद पर अड़े रहे। इधर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने के आसपास जितने कबीले थे सबसे दोस्ती का हाथ बढ़ाया और उनसे सन्धि की। यह देखकर मक्का के काफिर और भी जल-भुन गये कि इससे तो मुहम्मद का और जोर बढ़ेगा जिसका तोड़ ज़रूरी है। काफिरों ने भी मदीने में मुसलमानों के चारागाह से ऊँटों को लूट लिया। इस प्रकार की छिट-पुट घटना ने एक बड़ी लड़ाई को अस्तित्व प्रदान किया जिसे बदर की लड़ाई के नाम से जाना जाता है।

बदर युद्ध में मुसलमानों की संख्या केवल 313 थी और काफिरों की तादाद 1000 थी। घमासान युद्ध हुआ, दोनों ओर से तलवार के धनियों ने अपने

जौहर दिखाये अन्ततः सत्य जीत गया अर्थात् मुसलमानों को फतह नसीब हुई और काफिरों को जबरदस्त तरीके से मुँह की खानी पड़ी। एक हजार की संख्या के बावजूद वह हार गये और उनके कई बड़े सरदार और फौजी कमाण्डर मौत के घाट उतार दिये गये। हज़रत मुहम्मद सल्ल० युद्ध के दौरान अल्लाह के सामने रो-रो कर दुआ कर रहे थे कि ऐ अल्लाह! यह तेरे मुट्ठी भर इबादत करने वाले मिट गये तो फिर ज़मीन पर तेरी इबादत न होगी।

खैर! इस जंग में काफिरों की ओर से सत्तर लोग मारे गये और उतने ही गिरफ्तार हुए। मुसलमानों की ओर से सिर्फ चौदह लोगों ने शहादत पायी। अब कुरैशी काफिरों को अपने सत्तर योद्धाओं का बदला लेने का ख्याल हुआ। मक्का में आम तौर पर बदला लेने की आग अन्दर ही अन्दर सुलग रही थी। शायरों और वक्ताओं ने आग में घी डालने का काम किया। बहरहाल कुछ समय बाद कुरैशी काफिरों के कमाण्डर अबू सुफियान की सरपरस्ती में काफिरों के फौजी दस्ते ने

उहद पहाड़ नामक स्थान पर पड़ाव डाला और दो दिन यहाँ जमे रहे। तीसरे दिन जुमा था, हजरत मुहम्मद सल्ल० जुमे की नमाज पढ़कर एक हजार मुसलमानों को साथ लेकर बाहर निकले। उनमें मुनाफिकों (कपटाचारियों) के सरदार अब्दुल्लाह बिन-उबइ बिन सलूल के भी तीन सौ आदमी थे। चूँकि इस जंग में अब्दुल्लाह बिन उबइ के मशवरे को कुबूल न किया गया था। अतः ऐन मौके पर उसने धोखा दिया और अपने तीन सौ आदमियों को यह कहकर वापस बुला लिया कि मुहम्मद सल्ल० ने मेरी राय न मानी। अब सिर्फ सात सौ मुसलमान रह गये जिनमें से सिर्फ सौ आदमियों के पास जिरहें (लोहे का कवच) थीं।

खैर! युद्ध शुरू हुआ और मुसलमानों ने बहादुरी दिखा कर शुरू में ही जीत अपनी मुट्ठी में कर ली थी, मगर कुछ लोगों की एक गलतफहमी की वजह से जीत मुसलमानों के हाथों से सरक गई। हालाँकि इसे शिकस्त भी नहीं कहा जाएगा लेकिन मुसलमानों का इसमें अच्छा-खासा नुकसान हुआ। इस जंग में सत्तर मुसलमान शहीद हुए। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इस जंग में जख्मी हुए। एक काफिर ने दूर से उनको जोर

से पत्थर मारा जिससे आप सल्ल० के दो दाँत शहीद हो गये, फिर भी आपने दर्द में डूबा एक जुमला बोला, जो रहती दुनिया तक याद रहेगा “ऐ खुदा! मेरी कौम के कुसूरों को माफ कर कि वह नादान हैं”।

इस जंग के बाद मुसलमानों ने अब यहूदियों की साजिशों और खतरों पर ध्यान देना शुरू किया। मक्का के काफिरों से जितना खतरा नहीं रहा उतना अब मदीने के यहूदियों से हो गया। अतः हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे हुए समझौते पर पुनर्विचार करना शुरू किया। उनसे किये गये समझौते याद दिलाए गये लेकिन वह मुसलमानों को परेशान करने और उनके विरुद्ध षडयन्त्र करने से बाज न आए। अतः आप सल्ल० ने यहूदियों के खिलाफ मोर्चा खोला और उन्हें मदीने से बाहर कर दिया। इस दौरान कई जंगें हुईं लेकिन जीत मुसलमानों के हिस्से में आई।

मुसलमानों की बड़ी तमन्ना थी कि वह मक्का जाकर काबा के तवाफ और ज़ियारत से अपनी आँखें ठण्डी करें, जिससे वह कई सालों से वंचित कर दिये गये थे। इसी उद्देश्य के तहत आप सल्ल० चौदह सौ मुसलमानों को साथ लेकर मक्का रवाना हुए। लेकिन

मक्का के काफिरों को लगा कि मुसलमान हमसे लड़ने आ रहे हैं। अतः वह भी एक बड़ा गिरोह बनाकर मुसलमानों को रोकने के लिए निकल आये। हुदैबिया नामक स्थान पर पहुँच कर मुसलमान ठहर गये और अपना एक दूत उनके पास भेजा कि हमारा इरादा लड़ने का नहीं है, हम केवल उमरा का इरादा रखते हैं। अतः दोनों पक्षों के मध्य सन्धि हुई, जिसमें शर्तें ये थीं कि मुसलमान इस साल वापस जायें और अगले साल आयें और तीन दिन रहकर वापस जायें साथ में तलवार के सिवा कोई और हथियार न लायें। लौटते समय मक्का में जो मुसलमान रह गये हैं उनको अपने साथ न ले जायें। कुरैश में से कोई मुसलमान मदीना चला जाय तो वापस कर दिया जाय और अगर कोई मुसलमान मदीना छोड़कर मक्का चला आये तो वह वापस न किया जाय आदि।

यद्यपि सन्धि की ये शर्तें मुसलमानों के लिए भारी थीं, मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मानने की वजह से सबने उसका अनुसरण किया। इस सन्धि का ये फायदा हुआ कि अब तक मक्का के जो काफिर इस्लाम के प्रसार में रुकावट बने हुए थे, वह रोड़ा हट गया और मुसलमान खुल

कर इस्लाम का प्रचार— प्रसार करने लगे।

शनैः शनैः इस्लाम का विस्तार होने लगा और एक बड़ी संख्या इस्लाम को मानने लगी। हुदैबिया सन्धि ने मक्का में भी इस्लाम को फैलाने में अहम भूमिका निभाई। अतः इस्लाम की हर रूकावट दूर हुई और वह मक्का जो कभी मुसलमानों का दुश्मन था इस्लाम के कब्जे में आया और वह काबा जो 360 बुतों का ठिकाना था पाक किया गया और उसे दोबारा खुदा का घर बनाया गया।

जिस दिन मक्का विजय हुआ उस दिन मक्का के वह बड़े-बड़े सरदार जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मन, मुसलमानों के हत्यारे और इस्लाम के रास्ते के पत्थर थे, काबा के बरामदे में खड़े थे। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक नजर उठा कर देखा और पूछा, ऐ मक्का के सरदारों! आज मैं तुम्हारे साथ क्या बर्ताव करूँगा? सबने कहा, "आप जवानों के शरीफ भाई और बूढ़ों के शरीफ भतीजे हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, जाओ आज तुम पर कोई लानत नहीं, तुम सब आजाद हो।

मक्का विजय के पश्चात् इस्लाम के विरुद्ध दुश्मनों ने चहुँओर से हमले किये लेकिन

इस्लाम हर जगह भारी पड़ा और इस्लाम की धाक हर तरफ जम गयी।

तमाम जंगों से फुर्सत पाकर और इस्लामी कानून को लागू करने के बाद सन् 10 हिजरी में आप सल्ल० ने हज का इरादा किया। ये हज आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आखिरी हज साबित हुआ, इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस हज को "हज्जतुल विदाअ" कहा जाता है। इस हज में लगभग एक लाख से अधिक मुसलमानों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज किया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक रूह को इस दुनिया में तभी तक रहने की ज़रूरत थी जब तक इस्लाम धर्म की रौशनी चहुँओर फैल न जाय। जब ये हो गया तो अल्लाह ने उन्हें अपने यहाँ बुलाने का निमंत्रण भेजा। अतः हज से वापस आने के दो महीने बाद आपने जंगे उहद के शहीदों और आम मुसलमानों की कब्रों पर जाकर उनके लिए दुआएँ कीं। वापसी पर उनकी तबियत थोड़ी बिगड़ने लगी। यह सोमवार का दिन था। आप में जब तक ताकत रही मस्जिद में नमाज पढ़ाने आते रहे। सबसे आखिरी नमाज आपने मगरिब की पढ़ाई।

वफात के चार दिन पहले तबियत में कुछ सुकून हुआ तो नहाकर मस्जिद में तशरीफ ले गये और नमाज अदा की। मस्जिद में संक्षेप में इस्लाम से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें बताई, फिर घर लौट आये।

आपकी बीमारी बढ़ती जा रही थी। जिस दिन आपकी मृत्यु हुई उस रोज तबियत कुछ हल्की थी। आपका घर मस्जिद से लगा हुआ था। आपने भोर में पर्दा उठाकर देखा तो लोग फज्र की नमाज में मशगूल थे। यह देखकर आप मुस्कुराये कि अल्लाह की जमीन में आखिर वह समूह पैदा हो गया जो रसूल की तालीम का नमूना बनकर खुदा की याद में लगा हुआ है।

जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया आप पर बार-बार बेहोशी तारी होती रही। तीसरे पहर सीने में घरघराहट महसूस हुई। इतने में आपके होंठ हिले तो लोगों ने ये कहते हुए सुना "नमाज़ और गुलामों से नेक बर्ताव करो।"

इतने में हाथ उठाकर उंगली से इशारा किया और तीन बार कहा, "अब और कोई नहीं, वही सबसे बढ़कर साथी (रब) चाहिए।" यही कहते-कहते हाथ लटक गये, आँखें आसमान को लग गईं और पाक रूह परवाज कर गयी।



मस्जिद से मुसलमान का संबंध

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

इस्लाम में मस्जिद को इन्तिहाई बुलन्दी और इज़्ज़त हासिल है। यही वह इज़्ज़त व एहतेराम वाली जगह है जहाँ बन्दा अपने खुदा से सीधे तौर पर जुड़ जाता है और यहीं पर मुसलमानों के बीच आपस में भाईचारे और बराबरी का अमली मुज़हारा होता है। मस्जिद की अहमियत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि इसे अल्लाह का घर कहा गया है जो सारी कायनात का ख़ालिक व मालिक है। कुरआन मजीद में मसाजिद की तामीर और उनके तक्द्दुस (पवित्रता) का ख़ास हुक्म है। मस्जिद में बराबरी और इत्तिहाद की बेहतरीन तस्वीर नज़र आती है, यहाँ अमीर—ग़रीब, ऊँचे—नीचे तबक़े का कोई फ़र्क़ नहीं रहता। सब एक सफ़ में कंधे से कंधा मिला कर खड़े होते हैं। यह जगह इन्सान के दिल को दुनिया की गन्दगियों से پاک करने वाली और तक्वे की तरफ़ ले जाने वाली है।

इस्लाम में मस्जिद की हैसियत दूसरे मज़ाहिब की

इबादतगाहों की तरह सिर्फ़ इबादात अंजाम देने की जगह की नहीं है बल्कि मस्जिद इस्लामी समाज की इज्तेमाइयत (Unity) का बुनियादी मरकज़ (Center) है। मस्जिद दीनी, सियासी, समाजी, अख़्लाकी और रिफ़ाही क़यादत का मरकज़ है, जिसका नमूना अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अपने दौर में बहुत ही मुनज़्ज़म तौर पर पेश करके उम्मत को दिखा दिया।

दौरे नबवी में मस्जिद को इबादात के अलावा दूसरे फ़लाही कामों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। जैसे कि मस्जिद ही पढ़ने—पढ़ाने और दर्सगाह का काम करती थी। यहीं पर कुरआन, हदीस, फ़िक़ह और दूसरे इस्लामी उलूम की तालीम दी जाती थी। जिनमें ख़ास तौर पर “अस्हाबे सुफ़्फ़ा” का हलक़—ए—दर्स भी शामिल है। मस्जिद में ही अहम कामों के मश्वरे और फ़ैसले किये जाते थे। इज्तेमाई मामलात, मुल्की पॉलीसी, और अहम फ़ैसलों के लिए शूरा (कमेटियों) का

आयोजन मस्जिद में ही किया जाता था। मस्जिद अदल का मरकज़ थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और खुलफ़ाए राशिदीन रज़ियल्लाहु अन्हुम के दौर में मुक़द्दमों के फ़ैसले और इन्साफ़ का निफ़ाज़ भी यहीं से होता था। मस्जिद में मेहमान नवाज़ी और बाहर से आने वाले वुफूद (Delegations) का इस्तेक़बाल भी किया जाता था। दूसरी रियासतों से आने वाले मेहमानों को मस्जिद में ही ठहराया जाता था, उन से विचार विमर्श (बातचीत) भी होती थी और अहम मामलों पर फ़ैसले भी यहीं लिये जाते थे। मस्जिद के ज़रिये ही फ़लाही और इमदादी काम अंजाम दिये जाते थे जिनमें ख़ासतौर पर ग़रीबों, बेसहारों और मुसाफ़िरों के रहने और खाने का इन्तिज़ाम भी शामिल था। जंग के दिनों में ज़ख़्मियों के इलाज व मुआलिजे के लिए भी मस्जिद ही का इस्तेमाल किया जाता था।

इस्लाम में मस्जिद की अहमियत इतनी है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्की

ज़िन्दगी में बेइन्तिहा तकलीफ़ें बर्दाश्त करने के बाद हिजरत करके मदीना पहुँचे तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने पहले अपना घर तामीर नहीं करवाया बल्कि तक़रीबन सात माह तक हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हू के मकान में मुक़ीम रहे और इस दौरान आप ने इस्लामी शिनाख़्त और पहचान के लिए मदीना मुनव्वरा में पहला बुनियादी काम यह किया कि मस्जिदे नबवी की तामीर करवाई। आपने मदीना पहुँच कर ऐसा भी नहीं किया कि किसी जगह को मुत्तख़ब कर लिया हो और बस हुक्म दे दिया हो कि यहाँ पर एक मस्जिद बना दी जाए और वहाँ मस्जिद तामीर कर दी जाती... नहीं...! बल्कि इस्लामी शरीअत के अहक़ाम व क़वानीन को सामने रखते हुए बाक़ायदा तौर पर एक ज़मीन का इन्तिख़ाब किया गया और शरई तौर पर उस ज़मीन की कीमत अदा करने के बाद मस्जिद की तामीर की गई।

जब मस्जिदे नबवी बन कर तैयार हो गई तो उसके बाद आपने मस्जिद के इर्दगिर्द अज़वाजे मुतहहरात के लिए हुज़रे तामीर करवाए। बाद में जब मुसलमानों की आबादी मुख़्तलिफ़ इलाकों में फैलने

लगी तो आपने मुसलमानों को हर आबादी में मस्जिद बनाने का हुक्म दिया। मुसलमानों ने इस पर अमल किया और हर गाँव और महल्ले में मस्जिदें तामीर कीं, यहाँ तक कि मस्जिदें मुसलमानों के उस जगह आबाद होने की अलामत व निशानी क़रार पाई।

मस्जिद जो कि अल्लाह का घर कहलाता है और अल्लाह तआला ने मस्जिद को मुसलमानों की इबादत के लिए मख़सूस किया है इसकी बहुत सी वुजूहात हैं। आइये हम देखते हैं कि मस्जिद की हमारी ज़िन्दगी में क्यों ज़रूरत है और इसमें क्या राज़ पोशीदा हैं।

मस्जिद अल्लाह की इबादत की जगह है। जब एक मोमिन मस्जिद में दाख़िल होता है तो सबसे पहले वह जिस्म को पाक व साफ़ करके दाख़िल होता है। मस्जिद में इन्सान बेकार और ख़ुराफ़ात की बातों और कामों से बचता और परहेज़ करता है, अपने आप को सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा की रज़ा हासिल करने के लिए लगाता और इबादत में मशगूल होता है।

मोमिन की ज़िन्दगी और मस्जिद पर ग़ौर किया जाए तो हमें इस से बहुत से सबक़ मिलते हैं:—

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद का बहुत एहतेराम करता है, इसमें हलाल आमाल ही अंजाम देता है, हराम कामों से बचता है, उसी तरह मोमिन की ज़िन्दगी है जो अल्लाह ने उसे अता की है, उसे उसका भी बहुत एहतेराम करना चाहिए और उसे जायज़ व हलाल कामों में ही लगाना चाहिए और हराम कामों से बचना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद को पाक—साफ़ रखने की हर मुमकिन कोशिश करता है, उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के मामलात को भी बिल्कुल पाक—साफ़ रखने की कोशिश करनी चाहिए, अपनी रूह को बुग़ज़, हसद, जलन, कीना, कुदूरत, दुश्मनी से पाक रखना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में जायज़ और सतर को ढाँपने वाले कपड़े पहनता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी जायज़ और सतर को ढाँपने वाला लिबास पहनना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में झूठ बोलने से बचता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी के हर काम में झूठ बोलने से बचना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में झूठी क़सम खाने से परहेज़ करता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी झूठी क़सम खाने से बचना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में फ़हशगोई और फ़हश अमल से बचता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी बेहूदा बातों और फ़हश आमाल से बचना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में किसी को धोखा देने और बुरे नामों से पुकारने से बचता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी दूसरों को धोखा देने और बुरे अलफ़ाब से पुकारने से बचना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में दस्त दराज़ी और ज़बान दराज़ी से बचता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी बिला वजह दस्त दराज़ी और ज़बान दराज़ी से बचना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में ज़िक्र व अज़कार में मशगूल होता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी भी अपनी ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र से मोअत्तर रखना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद की तामीर व तरक्की में अपनी हलाल और पाकीज़ा कमाई को लगाता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी के तमाम कामों में भी हलाल और पाकीज़ा कमाई ही इस्तेमाल करनी चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में नज़्म व नस्क़ के साथ सफ़ों को तरतीब देता है और मुनज़्ज़म तौर पर (*Disciplined*) बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िर होता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी के हर काम में नज़्म व नस्क़ (*Discipline*) अपनाना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में कुरआन और अहादीसे रसूल के मुक़ाबिल अपनी बात पेश नहीं करता उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी कुरआन और अहादीसे रसूल के सामने अपनी मर्ज़ी नहीं चलानी चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में सुकून, इत्मिनान के साथ इबादतों में लगा रहता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी सुकून व इत्मिनान के साथ तमाम मामलात को अंजाम देना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में पानी, लाइट और दूसरी चीज़ों को अल्लाह की अमानत समझ कर फुजूलखर्ची से बचते हुए ज़रूरत भर इस्तेमाल करता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी अल्लाह की दी हुई तमाम नेमतों को ज़रूरत भर ही इस्तेमाल करना चाहिए।

जिस तरह एक मोमिन मस्जिद में सुकून व वक़ार के साथ बिला वजह की चीख़ व पुकार और बेअदबी से परहेज़ करते हुए इबादतों को अंजाम देता है उसी तरह मोमिन को अपनी ज़िन्दगी में भी अपने तमाम कामों में अदब और सलीके को बाकी रखना चाहिए।

लिहाज़ा आज हमें अपनी ज़िन्दगी के तमाम मामलात और आमाल पर गौर करना चाहिए कि हम मस्जिद से क्या क्या सबक ले रहे हैं? क्या हम सब मस्जिद जैसी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं या अपनी मनमानी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। अल्लाह तआला हम सबको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मस्जिद जैसी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बनाए।
आमीन



आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

नबी (सल्ल०) के जीवन संबंधित सवाल-जवाब

प्रश्न: फरिश्तों की बात का नबी (सल्ल०) ने क्या जवाब दिया?

उत्तर: नबी (सल्ल०) ने फरमाया कि नहीं! ये नासमझ लोग हैं, अगर आज इन्होंने मेरी दावत को रद्द कर दिया है तो मुमकिन है कल उनकी औलाद इसको कबूल कर ले।

प्रश्न: नबी (सल्ल०) की बातचीत का अन्दाज क्या होता था?

उत्तर: नबी (सल्ल०) ठहर-ठहर कर बात करते थे।

प्रश्न: बच्चों के पास नबी (सल्ल०) का गुज़र होता तो क्या करते थे?

उत्तर: नबी (सल्ल०) खुद बच्चों को सलाम करने में पहल करते थे।

प्रश्न: नबी (सल्ल०) ने अनसार और मुहाजिरीन के बीच किस तरह का रिश्ता कायम किया?

उत्तर: मवाखात (भाईचारे) का।

प्रश्न: मदीना में कियाम के दौरान बुनियादी तौर पर नबी (सल्ल०) ने क्या-क्या काम किए?

उत्तर: (1) मुवाखात (आपसी

भाईचारे का रिश्ता कायम करना) (2) तनजीम (संगठन) (3) तिजारती मन्डी का कियाम (4) यहूदियों और मुख्तलिफ कबीलों से मुआहदे।

प्रश्न: नबी (सल्ल०) ने सबसे पहले किस मस्जिद की बुनियाद रखी?

उत्तर: मदीना में मस्जिदे-कुबा की।

प्रश्न: नबी (सल्ल०) जब किसी के मकान पर तशरीफ ले जाते तो कितनी बार इज़ाजत लेते थे?

उत्तर: नबी (सल्ल०) दरवाज़े के दाएँ या बाएँ खड़े हो जाते और तीन बार अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह कहते, अगर जवाब न मिलता तो वापस चले जाते।

प्रश्न: नबी (सल्ल०) पानी किस तरह पीते थे?

उत्तर: बैठ कर, तीन साँसों में।

प्रश्न: नबी (सल्ल०) के हमशक़ल किस सहाबी के शहीद होने पर यह अफवाह फैल गई थी कि आप (सल्ल०) शहीद हो गए?

उत्तर: हजरत मुसअब-बिन-उमैर (रज़ि०), गजव-ए-उहुद में नबी (सल्ल०) की हिफाजत

करते हुए शहीद हो गए थे। वे आप (सल्ल०) से शक़ल व सूरत में बहुत मिलते-जुलते थे।

प्रश्न: अहले-सुफ़ा कौन लोग थे?

उत्तर: वे जलीलुल-कद्र सहाबा (रज़ि०) जो दीन की खातिर घर-बार छोड़ कर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आ गए थे और मस्जिद नबवी में सायादार चबूतरे (सुफ़ा) पर रहते थे जिनके खाने-पीने का इन्तिजाम नबी (सल्ल०) के जिम्मे था। इन बुजुर्गों ने इस्लाम की तारीख में हैरत अंगेज़ कारनामों का इज़ाफा किया।

प्रश्न: नबी (सल्ल०) ने अपने चचा हज़रत हमजा (रज़ि०) को सैयदुश-शुहदा (शहीदों के सरदार) का खिताब कब दिया?

उत्तर: उहुद की लड़ाई में हिन्दा ने हज़रत हमजा (रज़ि०) की लाश का मुसला किया (चेहरा बिगाड़ दिया) था नबी (सल्ल०) ने जब उनको इस हाल में देखा तो फरमाया ये सैयदुश-शुहदा हैं।

❖❖❖

सीरत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

(मुहम्मद अरशद नदवी स्योहारा बिजनौर)

मौसमे बहार रबीउल अब्बल सन 570 ई0 पीर के दिन सुबह के वक्त हजरत मुहम्मद सल्ल0 हिदायत का चिराग बन कर रौशन हुए और आप सल्ल0 ने सारी दुनिया को रौशन कर दिया। शिर्क व कुफ्र के महल्लात में ज़ल ज़ला आ गया, सालों से जल रही मजूसियों के आतिशकदा की आग ठन्डी पड़ गयी ये इशारा था कि अब कुफ्र व शिर्क के खात्मे का वक्त आ गया है और गुमराही का अन्धेरा छटने वाला है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के लिए अल्लाह को ये मन्ज़ूर था कि आप सल्ल0 अपने वालिद का साया ना पायें बल्कि अल्लाह खुद आप की निगहबानी करे लिहाजा आपके वालिद का इन्तिकाल आप की पैदाइश से पहले मदीना में हो गया।

आपकी वालिदा हज़रत आमिना ने आप सल्ल0 की पैदाइश की खबर आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब को दी वो बहुत खुश हुए और आप सल्ल0 को लेकर खानाए काबा में गये दुआ की और आपका नाम मुहम्मद सल्ल0 रखा, वहीं आप सल्ल0 की वालिदा ने आप का नाम अहमद रखा।

आप सल्ल0 की वालिदा ने 4 दिन, खादिमा ने 4 माह और

दाई हलीमा ने 2 साल दूध पिलाया। जब आप सल्ल0 की उम्र मुबारक 6 साल की हुई तो मदीना से वापसी पर "अबवा" नाम की जगह पर आप सल्ल0 की वालिदा का इन्तिकाल हो गया। और वहीं उनकी तदफीन हुई। आप सल्ल0 उम्मे ऐमन के साथ मक्का तशरीफ ले आये और दादा की परवरिश व शफकत में आ गये, आप सल्ल0 की 8 साल की उम्र मुबारक में दादा भी इस दुनिया से रुखसत हो गये, इन्तिकाल से पहले अपने बेटे अबू तालिब को वसीयत कर गये कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 का ख्याल रखना अबू तालिब ने दादा की कमी महसूस नहीं होने दी अपनी औलाद से ज्यादा ख्याल रखते।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने बचपन में कभी खेल कूद और बेकार के कामों में अपना वक्त बरबाद नहीं करते थे, अल्लाह तआला ने आप सल्ल0 को हर बुराई से बचा कर रखा था आप सल्ल0 कुफ्र शिर्क और बुतपरसती से बहुत दूर थे।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की आमद की खबर हर नबी और आसमानी किताबों में दी गयी थी। जब आप सल्ल0 की उम्र मुबारक 12 साल की हुई तो अबू तालिब ने जब शाम के सफर

पर तिजारत के लिये जाने का इरादा किया तो आप सल्ल0 भी जाने के लिए ज़िद करने लगे पहले तो चचा ने मना किया फिर ले जाने के लिए राजी हो गये शाम के शहर "बुसरा" पहुँचे तो बुहैरा राहिब ने आप सल्ल0 को पहचान लिया कि आप को नुबुव्वत मिलेगी। आप सल्ल0 के चचा से कहा कि अगर शाम के यहूदी या इसाई इनको देख लेंगे तो कत्ल कर देंगे आपके चचा ने आप सल्ल0 को वापस मक्का भेज दिया।

जब हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का शाम का दूसरा सफर हुआ उस वक्त उम्र मुबारक 24 साल की थी। आप सल्ल0 हज़रत खदीजा रज़ि0 का सामाने तिजारत ले कर शाम के सफर पर तशरीफ ले गये आप सल्ल0 के साथ हज़रत खदीजा रज़ि0 का गुलाम मैसरा भी था। उसने वापसी पर हज़रत खदीजा रज़ि0 से आप सल्ल0 के अख़्लाक ईमानदारी और तिजारत में फायदे के बारे में बताया आप रज़ि0 पर बहुत असर पड़ा और आप रज़ि0 ने अपनी खादिमा नफीसा के जरिए अपना रिश्ता भेजा, आप सल्ल0 ने अपने चचा से जिक्र किया वह बाखुशी तैयार हो गये। निकाह की तारीख रख

ली गई अबूतालिब ने खुतबा पढ़ा और महर 1.5 औकीया सौना तेय हुआ।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० अपने रब की इबादत में मशगूल रहने लगे कई-कई दिन आप गार में जाकर इबादत करते खाना पानी साथ ले जाते।

एक दिन आप सल्ल० अपने रब की इबादत में मशगूल थे कि अचानक एक फरिश्ता हाजिर हुआ और कहा पढ़िये आप सल्ल० ने फरमाया मैं पढ़ना नहीं जानता। फरिश्ते ने आप सल्ल० को बहुत जोर से दबाया ऐसा तीन बार हुआ फिर आप सल्ल० ने फरिश्ते के साथ सूरह अलक की पाँच आयात पढ़ीं।

आयतों का **अनुवाद**— पढ़िये अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को एक गोश्त के लोथड़े (टुकड़े) से पैदा किया। पढ़िये और आपका रब बहुत करीम (दयालू) है जिसने कलम के जरिये इल्म (ज्ञान) सिखाया, इन्सान को वो सिखाया जो वह जानता नहीं था।

आप सल्ल० इन आयात को लेकर घर वापस हुए आप सल्ल० की तबीयत पर बहुत बोझ था दिल काँप रहा था आप सल्ल० पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी नुबुव्वत की आ गयी थी आप सल्ल० ने हज़रत खदीजा रज़ि० से कहा मुझे चादर ओढ़ाओ आप रज़ि० ने चादर ओढ़ा दी यहाँ तक कि आप सल्ल० सही हो

गये और फरमाया मुझे अपनी जान का खौफ है। हज़रत खदीजा रज़ि० ने अर्ज किया अल्लाह आप को रूसवा नहीं करेगा आप सल्ल० रिश्ते दारों के हुक्क अदा करते हैं, किसी को परेशान देखते हैं तो उसका बोझ उठा लेते हैं, मेहमानों की मेहमान नवाजी करते हैं। मुसीबतज़दा की मदद करते हैं।

नबीए करीम सल्ल० ईमान की दावत देते रहे सबसे पहले खदीजा रज़ि० ईमान लाई, फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० और हज़रत हारिस रज़ि० इसी तरह मुसलमानों की तादाद बढ़ती रही, आप सल्ल० ने हज़रत अरकम रज़ि० के घर को दावत का मरकज बनाया। अल्लाह की तरफ से तीन साल बाद आप सल्ल० को खुल कर दावत देने का हुक्म हुआ।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने सफा पहाड़ पर चढ़ कर कुरैश को जमा किया और फरमाया अल्लाह एक है उसी की इबादत करो उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ। इस पर कुरैश के सरदार भड़क गये क्योंकि उनकी रग रग में बुत परस्ती बसी हुई थी।

मुश्रिकीने मक्का मुसलमानों को हर तरह से परेशान करते और आप सल्ल० को भी तकलीफ़ देने में कोई कमी नहीं रखते।

एक रोज़ आप सल्ल० सफा के पहाड़ पर बैठे हुए थे कि

अबूजहल आया आप सल्ल० को बहुत बुरा भला कहा आपने सब्र किया, एक पत्थर आप सल्ल० के सर पर मारा जिससे खून निकल गया आप सल्ल० ने फिर भी कुछ नहीं कहा, एक बांदी ये सब देख रही थी आप के चचा हज़रत हमजा जो अभी ईमान नहीं लाये थे उनको पूरा किस्सा सुनाया हज़रत हमजा रज़ि० बहुत गुस्से में अबूजहल के पास गये और अपनी कमान उसके सर पर मारते हुऐ कहा कि तुम्हारी ये जुरअत मेरे भतीजे को बुरा भला कहे अब मैं भी उसके दीन को मान लेता हूँ और वो जो कहते हैं मैं भी वही कहता हूँ अबूजहल खामोश बैठा रहा।

उसके बाद हज़रत उमर रज़ि० ईमान लाये आप रज़ि० के ईमान लाने के बाद मुसलमानों ने खाना—ए—काबा में पहली बार बाजमाअत नमाज अदा की उस वक्त आप सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० को “फारुक” का लक़ब दिया।

कबील—ए—दौस के सरदार तुफैल आप सल्ल० के हाथ पर ईमान लाये, कुरैश की दुश्मनी बढ़ने लगी तो मुसलमानों की एक जमात (जो 15 लोगों की थी) हबशा की तरफ हिजरत कर गई।

कुछ वक्त बाद अल्लाह की तरफ से आप सल्ल० को हिजरत का हुक्म हो गया उधर

मुशिरकीने कुरैश ने आप सल्ल० को कत्ल करने की योजना बना ली, हर कबीले से एक एक आदमी लिया और रात में एक साथ हमला करने का प्रोग्राम बना लिया। आप सल्ल० को अल्लाह की तरफ से खबर कर दी गयी, आप सल्ल० ने अपने बिस्तर पर हज़रत अली रज़ि० को लिटाया और मुशिरकीने मक्का के सरो पर मिट्टी डालते हुए उनके सामने से तशरीफ ले गये। आप सल्ल० के सफर के साथी हज़रत अबूबक्र रज़ि० थे मुशिरकीने ने आप सल्ल० का पीछा किया और 100 ऊँट का इनाम भी रखा मगर आप सल्ल० के साथ अल्लाह की मदद शामिल थी कई रोज सफर करके आप सल्ल० कुबा पहुँचे वहाँ इस्लाम की पहली मस्जिद "मस्जिदे कुबा" की तामीर की और पहला जुमा पढ़ा जिस में 100 मुसलमानों ने शिरकत की। शाम के वक्त आप सल्ल० मदीना में दाखिल हुए आपकी आमद की खबर आग की तरह मदीने में फैल गई जवान बच्चे बूढ़े औरतें सब आप सल्ल० के इस्तेकबाल के लिए घरों से निकल पड़े।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० अपनी ऊँटनी पर सवार होकर मदीना में दाखिल हो रहे थे। हर कबीले का सरदार आप सल्ल० से दरखास्त करता कि आप उनके यहाँ ठहर जाएँ, आप

सल्ल० फरमाते ऊँटनी को छोड़ दो उसको अल्लाह की तरफ से हुक्म दिया जा चुका है आखिर ये ऊँटनी हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के घर के सामने बैठ गयी और आप सल्ल० उनके घर ठहर गये। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० आप सल्ल० के लिए दोनों वक्त खाना भेजते जो बच जाता अपनी बीवी के साथ बरकत के लिए खा लेते।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने मस्जिदे नबवी की तामीर का इरादा फरमाया, दो यतीम बच्चों की ज़मीन खरीदी और उस पर मस्जिदे नबवी तामीर की गई, कच्ची ईंटों की दीवार खजूर के पत्तों का छप्पर, फर्श कच्ची मिट्टी का, अगर बारिश हो जाती तो कीचड़ हो जाता, मस्जिद की बाई जानिब पीछे के हिस्से में एक चबूतरा था उसमें वो सहाबा जो दीन सीखने के लिए आते वो यहाँ रहते थे।

मस्जिदे नबवी में सबसे पहले आजान हज़रत बिलाल रज़ि० ने पढ़ी।

हिज़रत के वक्त से मुशिरकीने कुरैश ने आप सल्ल० से जंग की तैयारी शुरू कर दी थी। आप सल्ल० को इसकी खबर दी गई आप सल्ल० 313 जानिसार सहाबा की जमाअत लेकर मुकाबले के लिए जंग के मैदान में तशरीफ ले गये मुशिरकीने कुरैश 1000 की तादाद में थे मुकाबला हुआ, तो अल्लाह

ने मुसलमानों की मदद फरमाई और कामयाबी मुसलमानों की हुई।

फतेह मक्का

हिज़रत से पहले मुशिरकीने मक्का ने आप सल्ल० का मक्का में रहना दुश्वार कर दिया था। आज फतेह मक्का का दिन आ गया आप सल्ल० फतेह हैं मक्का में दाखिल हो रहे हैं। आम माफी का ऐलान किया जा रहा है जो हरम में दाखिल हो जाए उसको अमान है, जो अपने घर का दरवाजा बन्द करले या अबू सुफयान रज़ि० के घर में दाखिल हो जाए उसको भी अमान है, आप सल्ल० चाहते तो एक एक से बदला ले सकते थे जैसा कि फतेह बादशाह करते हैं। मगर आप सल्ल० ने ऐसा नहीं किया फिर वो वक्त भी आया जब आप सल्ल० ने हिजाज़ में इस्लामी हुक्म कायम फरमाई।

आप सल्ल० हरम तशरीफ ले गये काबे में 360 बुत रखे थे आप सल्ल० के हाथ में कमान थी आप सल्ल० उससे बुतों को गिरा रहे थे और कुरआन की आयतें तिलावत फरमा रहे थे अनुवाद:- हक आ गया बातिल खत्म हो गया बेशक बातिल मिटने की ही चीज़ है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने हज का इरादा फरमाया इसका ऐलान करा दिया गया इस का ये असर हुआ कि हर तरफ से सहाबा की जमाअत आप सल्ल० के साथ हज की सआदत हासिल

करने के लिए जमा हो गयी। आप सल्ल० ने हज के अरकान अदा किये और सहाबा को मुखातिब करके फरमाया। “जुल्म ना करना, ब्याज आज से हराम है, तुम से कयामत में तुम्हारे अमल (कर्म) के बारे में मालूम किया जाएगा, मेरे बाद कुफ़ शिर्क की तरफ ना पलटना कि एक दूसरे की गरदन मारने लगो। आप सल्ल० हज के बाद मदीना तशरीफ ले आये।

सफरे आरिबरत

29 सफर सन् 11 हिजरी पीर के दिन आप सल्ल० के सर में दर्द शुरू हुआ आप सल्ल० ने सर पर पट्टी बांधी, ये आप सल्ल० की वफात की बीमारी की शुरूआत हुई इसी हाल में 13 या 14 दिन नमाज पढ़ाई फिर आप सल्ल० ने हजरत अबूबक्र रज़ि० को नमाज पढ़ाने का हुक्म फरमाया आप रज़ि० ने आप सल्ल० की जिन्दगी में 17 नमाजे पढ़ाई।

आखिर में समस्त बीवियों से इजाजत ले कर हजरत आयशा रज़ि० के कमरे में ठहरे, वफात से पाँच दिन पहले आप सल्ल० की बीमारी में इजाफा हो गया और बेहोशी होने लगी। जब तबीअत बेहतर हुई तो आप सल्ल० मस्जिद में तशरीफ ले गये और फरमाया अल्लाह यहूद और नसारा पर लानत फरमाये कि उन्होंने अपने अम्बिया की

कब्रों को सज्दा गाह बनाया तुम मेरी कब्र को सज्दा गाह ना बनाना कि उसकी पूजा करो।

हजरत मुहम्मद सल्ल० ने वफात से एक दिन पहले अपने सब गुलामों को आजाद कर दिया माल में 7 दीनार थे उनको सदका कर दिया।

आखरी दिन

फज्र के वक्त नबी-ए-करीम सल्ल० ने सहाबा रज़ि० को नमाज पढ़ते देखा तो मुसकुराए, चाशत के वक्त आपने अपनी बेटी हजरत फातिमा रज़ि० को बुलाया कान में कोई बात फरमाई आप रज़ि० रोने लगीं फिर बुलाया कोई बात फरमाई तो आप रज़ि० हंसने लगीं। हजरत आयशा रज़ि० फरमाती हैं बाद में मालूम किया तो फरमाने लगीं आप सल्ल० ने फरमाया कि आपकी वफात इसी बीमारी में होगी तो मैं रोने लगी फिर फरमाया मेरे घर वालों में सबसे पहले तुम मुझसे मिलोगी तो मैं हंसने लगी।

हजरत मुहम्मद सल्ल० ने हजरत हसन हजरत हुसैन को बुलाया और उनके लिए खैर की वसीयत की फिर अपनी बीवियों को बुलाया उनको नसीहत और वसीयत की और सहाबा से फरमाया नमाज ना छोड़ना और गुलामों के साथ अच्छा सुलूक करना। फिर आप सल्ल० पर नज़अ (मौत) का वक्त शुरू हो गया उसी वक्त हजरत अब्दुर्रहमान

रज़ि० हाथ में मिस्वाक लिए तशरीफ लाये आप सल्ल० उनको देखने लगे हजरत आयशा रज़ि० समझ गयीं और हजरत अब्दुर्रहमान रज़ि० के हाथ से मिस्वाक लेकर आप सल्ल० को दी आपने मिस्वाक की ये आप सल्ल० का आखरी अमल था। रहमते आलम सल्ल० के होंट हिले आप सल्ल० दुआ फरमा रहे थे ऐ अल्लाह मुझे अम्बिया शोहदा और नेक लोगों के साथ कर दे जिन्हें तूने इनाम से नवाजा और मुझे बख्श दे, मुझ पर रहम फरमा और मुझे रफीके आला से मिला, आप सल्ल० ने ये तीन बार कहा इस वक्त आप सल्ल० की निगाह छत पर थी। यह कहते हुए आपका हाथ एक तरफ लुढ़क गया। आप सल्ल० अपने रब से जा मिले ये 9 रबीउल अब्वल (बाज 12 रबीउल अब्वल भी आप सल्ल० की वफात की तारीख कहते हैं।) सन् 11 हि० पीर का दिन था।

वफात के बाद आप सल्ल० को गुस्ल दिया गया और हजरत आयशा रज़ि० के हुजरे (कमरे) में दफन किया गया। आप सल्ल० की नमाजे जनाजा मर्द औरतों बच्चों ने अलग अलग पढ़ी।

अल्लाह तआला अपनी रहमत नाज़िल करे हजरत मुहम्मद सल्ल० पर आप पर लाखों करोड़ों दुरुदो सलाम हो।



आशा की किरण बुझने न पाये

(मुहम्मद इक़बाल नदवी)

मानवीय जीवन सुख और दुख खुशी और गम सफलता, असफलता, उम्मीद और निराशा के साथ साथ व्यतीत होता है परन्तु निराशा उसके जीवन को कीड़े की तरह नष्ट करती रहती है और वह अन्दर ही अन्दर घुलता रहता है उसकी आत्म शक्ति खत्म होने लगती है और एक दिन वह पराजय को स्वीकार कर लेता है जबकि मानव इतिहास ऐसे अनेको उदाहरणों से भरा पड़ा है कि जिन लोगों ने उम्मीद का दामन हाथों से नहीं छोड़ा वह हर प्रकार की परिस्थितियों को संयम और सब्र के साथ झेलते रहे और पर्वत की तरह डटे रहे ऐसे ही महापुरुषों ने इतिहास के धारे को मोड़ा और मानवीय समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर निकाला, खुदा तआला भी ऐसे लोगों की सहायता करता है जो विपरीत हालात में भी धैर्य और संयम के साथ सच्चाई के मार्ग पर चलते रहते हैं पवित्र कुरआन में अल्लाह का फरमान है "अल्लाह की रहमत से निराश न हो"।

(सूर: अलजुमर-53)

यह आयत हमको संदेश देती है कि हालात चाहे जितने कठिन हों परेशानियां और

मुश्किलें कितनी ही बड़ी क्यों न हों मुसलमानों को अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिए क्योंकि हर कठिनाई के बाद आसानी आती है। अन्धेरा कितना हो घनघोर हो सवेरा होने का संदेश देता है।

रात कितनी ही भयानक और डराने वाली हो आखिर कट ही जाती है और फिर सुबह सवेरा सबके सामने होता है मुस्लिम समाज आज पूरे संसार में और खास तौर से भारत में जिन परेशानियों से गुज़र रहा है निःसंदेह यह उनके लिए और उनके अस्तित्व उनकी पहचान, भाषा, सभ्यता सबके लिए एक बहुत ही दुखदायक समय है परन्तु कुरआन शरीफ बार बार अपने मानने वालों से कह रहा है कि संयम और धैर्य के साथ अपने पथ पर चलते रहिए सब्र करने वालों के साथ खुदा तआला की मदद होती है। हजरत मुहम्मद सल्ल० का फरमान है कि पूरी कायनात की समस्त प्राणी जीव जन्तु अगर तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहें तो वह नुकसान नहीं पहुंचा सकते मगर उतना ही जितना अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है।

(अलहदीस)

कुरआन पाक में यूसुफ

अलैहिस्सलाम और उनके भाईयों का किस्सा बयान किया गया है यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई उनको अपने रास्ते का काँटा समझ कर मारना चाह रहे थे और इसके लिए उन्होंने हर प्रकार के प्रयास भी किये। जंगल के काले कुएं में उनको डाल दिया लेकिन खुदा तआला उनको मिस्र का बादशाह बनाना चाह रहे थे क्योंकि उनके बाप याकूब अलैहिस्सलाम ने आशा का दामन नहीं छोड़ा। वह खुदा से अच्छे परिणाम की उम्मीद कई वर्षों तक लगाये रहे अन्त में वही हुआ जो खुदा का फैसला था कि यूसुफ अलैहिस्सलाम मिस्र के बादशाह बने जबकि उससे पहले यूसुफ अलैहिस्सलाम को अनेकों प्रकार की परेशानियाँ झेलनी पड़ीं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की समस्त जिन्दगी हम सबके लिए एक आदर्श नमूना है मक्का में आपको और आपके साथियों को अनेकों प्रकार से प्रताड़ित किया गया सामाजिक बहिस्कार भी किया गया कभी पत्थर भी मारे गये कभी पूरे जीवन को समाप्त करने के प्रयास भी लोगों ने किए लेकिन आप सल्ल० ने कभी भी अल्लाह की रहमत और उसकी मदद से उम्मीद नहीं छोड़ी आखिरकार

सत्य की जीत हुई और असत्य अपने परिणाम को पहुंचा वह मक्का जिसमें आपको रहने नहीं दिया गया आपको अपने साथियों के साथ उसे छोड़ना पड़ा केवल दस वर्षों के बाद वही मक्का आपके आदर्शनीय तथा उच्च नियमों के अधीन हो गया।

निराशा शैतान का हथियार है:—

इस सांसारिक जीवन में इन्सान अनेकों बार प्रयास करता है किसी कार्य में सफल होने के लिए परन्तु कभी कभी सफलता उसके हाथ नहीं लगती और वह निराश हो कर बैठ जाता है यहीं से शैतान अपना काम शुरू कर देता है उसको परिस्थितियों का भयानक चेहरा दिखा कर मायूसी के दलदल में गिरा देता है फिर वहां से निकलना उसके लिए बहुत कठिन हो जाता है जबकि निरन्तर प्रयास करते रहना ही सफलता की चाबी है, कुरआन पाक में अल्लाह का फरमान है कि वह किसी के प्रयास को व्यर्थ नहीं करता है। इन्सान की कोशिश एक दिन रंग जरूर लाती है।

जब रास्ते बन्द दिखाई दें:—

कभी कभी इन्सान को लगता है कि उसके लिए सारे रास्ते बन्द हैं जब कि वास्तविकता यह है कि रास्ते बन्द नहीं होते हैं कुछ समय के

लिए कठिनाइयों से भर जाते हैं जिनको पार करना ही एक महान इन्सान की पहचान होती है कुरआन में अल्लाह ने फिरऔन और मूसा अलैहिस्सलाम के किस्से को बयान किया है इस किस्से के हर मोड़ पर हमें आशा और उम्मीद दिखाई देती है उम्मीद भी ऐसी जो पहाड़ की तरह डटी रहे जब फिरऔन ने अपनी फौज के साथ मूसा अलैहिस्सलाम और उनके साथियों का पीछा किया तो आगे समन्दर और पीछे फिरऔन की सेना, अब ऐसे समय में इन्सान को अपनी मौत दिखाई देने लगती है वही यहां भी दिखाई दिया मूसा अलैहिस्सलाम के साथी चीख पुकार करने लगे यहां तक कि कुछ लोगों ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि इससे तो अच्छा मिस्र में गुलामी का जीवन ही था कम से कम वहां हम जीवित तो थे मगर आज तो यहां हम वैसे ही मारे जायेंगे जैसे बिल्ली चूहों का शिकार करती है परन्तु मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐसे अवसर पर वह जवाब दिया जिसमें उम्मीद और आशा विश्वास के दर्जे तक पहुंचा हुआ था उन्होंने कड़क कर कहा कि ऐसा हरगिज नहीं होगा। जैसा तुम सोच रहे हो हमारा पालनहार हमें अवश्य रास्ता दिखायेगा फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने ईश्वर की आज्ञा का पालन

करते हुए अपनी लाठी को पानी पर मारा पानी में एकाएक बारह रास्ते बन गये जिससे मूसा अलैहिस्सलाम के साथ के बारह कबीले आसानी से समन्दर पार कर गये और फिरऔन अपनी पूरी सेना के साथ पानी में डूब गया इन उदाहरणों से पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि मुसलमान के लिए सबसे बड़ी उम्मीद यह है, कि उनका रब कभी उन्हें अकेला नहीं छोड़ता है। वह उनकी मदद करता है ऐसे समय में जब इन्सान को सारे रास्त बन्द दिखाई देते हैं निःसन्देह हम सबके लिए कुरआन के इन किस्सों में प्रेरणा है जो हमको संदेश देते हैं कि हमारा काम है कोशिश करते रहना, सच्चाई के पथ पर हर हाल में चलते रहना परिस्थियाँ चाहे जितनी विपरीत हों, जुल्म अत्याचार, भ्रष्टाचार इन सबकी उम्र बहुत लम्बी नहीं होती है आखिरकार जीत सच्चाई की ही होती है बस सच्चाई पर चलने वाले हालात की घटाटोप अन्धेरी रातों में भी आशा और उम्मीद का दीप जलाते रहें जो कुछ सुधार के लिए कर सकते हैं वह करें और हर हाल में अपने दिल से कहें कि हम टूटने वाले नहीं हैं हम अन्धेरी से घबराने वाले नहीं हैं हम अकेले नहीं हैं हमारा परवरदिगार हमारे साथ है।



AI के दौर में आज का उस्ताद कहाँ खड़ा है?

मुबारक कापड़ी

हम एक ऐसे दौर में दाखिल हो चुके हैं जहाँ इल्म सिर्फ किताबों, लाइब्रेरियों और क्लासरूम की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। आज एक तालिब-ए-इल्म अपने मोबाइल फोन पर दुनिया के किसी भी कोने में मौजूद मालूमात तक चंद सेकंड में रसाई हासिल कर सकता है। ए0आई0 ने तालीम, तहकीक़ रोजगार, सनअत, तिब, तिजारत और जिंदगी के तकरीबन हर शोबे में एक नई दुनिया के दरवाजे खोल दिए हैं। ए0आई0 सवाल का जवाब दे सकती है, मज़मून लिख सकती है, तर्जुमा कर सकती है, गणित के पेचीदा सवालात हल कर सकती है, तस्वीर बना सकती है, जबान सिखा सकती है और तालिब-ए-इल्म की तालीमी ज़रूरियात के मुताबिक़ मवाद भी तैयार कर सकती है। ऐसे में एक बुनियादी सवाल हमारे सामने खड़ा है कि जब एक मशीन इतना कुछ कर सकती है तो उस्ताद कहाँ खड़ा है? क्या ए0आई0 उस्ताद की जगह ले लेगी? क्या मुस्तक़बिल के स्कूलों में उस्ताद की ज़रूरत कम हो जाएगी? क्या

तालिब-ए-इल्म किताब और उस्ताद की जगह सिर्फ़ ए0आई0 पर इनहिसार करेंगे? इन सवालात का जवाब तलाश करना आज के तालीमी निजाम की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

उस्ताद और ए0आई0 मुकाबला या सहयोग—

ए0आई0 को उस्ताद का हरीफ़ समझना शायद बड़ी गलती होगी। हकीक़त यह है कि ए0आई0 उस्ताद की जगह लेने के बजाय उस्ताद के किरदार को तब्दील कर रही है। एक अच्छा उस्ताद सिर्फ़ मालूमात फराहम नहीं करता वह तालिब-ए-इल्म को यह समझाता है कि मालूमात में से सही क्या है और गलत क्या है, इल्म को जिंदगी में कैसे इस्तेमाल करना है, नाकामी का सामना कैसे करना है, दूसरों का एहताराम कैसे करना है और एक अच्छा इंसान कैसे बनना है। ए0आई0 मालूमात फराहम कर सकती है, लेकिन मालूमात को हिकमत में तब्दील करना उस्ताद का काम है। ए0आई0 जवाब दे सकती है, मगर सवाल पैदा करने की सलाहियत पैदा करना उस्ताद का काम है। ए0आई0 मजमून

लिख सकता है मगर तालिब इल्म को सोचना, महसूस करना और अपने ख्यालात को अपने शब्दों में बयान करना उस्ताद सिखाता है। ए0आई0 हिसाब कर सकती है मगर ज़िन्दगी के फैसलों में सही और गलत का फर्क समझाना उस्ताद के लिए ही मुमकिन है।

उस्ताद का असल मक़ाम कहाँ है?—

उस्ताद का असल मक़ाम, मालूमात देने वाले शख्स के तौर पर नहीं बल्कि इंसान बनाने वाले रहनुमा के तौर पर है। माजी में उस्ताद इल्म का सबसे बड़ा जरिया था। तालिब-ए-इल्म के पास मालूमात हासिल करने के सीमित साधन थे। उस्ताद पढ़ाता, किताबें तजवीज करता और सवालात के जवाब देता था। आज सूरत-ए-हाल बदल चुकी है। मालूमात हर जगह मौजूद हैं, यूट्यूब, गूगल, डिजिटल किताबें और एआई टूल्स तालिब-ए-इल्म को बेशुमार मालूमात फराहम कर सकते हैं। लिहाजा आज उस्ताद की अहमियत मालूमात की मिक्दार में नहीं बल्कि रहनुमाई, तरबियत, किरदार-साजी और फिक्री रहबरी में है।

उस्ताद के लिए मुस्तक़बिल का रास्ता ख़त्म नहीं हुआ बल्कि एक नया रास्ता खुला है। माजी का उस्ताद इल्म का मरकज था, आज का उस्ताद रहनुमा है और मुस्तक़बिल का उस्ताद, इल्म, टेक्नॉलॉजी, अखलाक और इंसानियत के दरमियान पुल होगा। ए0आई0 शायद एक दिन में हज़ारों किताबें पढ़ ले, लाखों सवालों के जवाब दे दे और सेकंडों में पेचीदा मसाइल हल कर दे, मगर एक उस्ताद की असल ताक़त उस के इल्म से ज़्यादा उस के इंसान होने में है, क्योंकि मशीन ज़ेहानत दे सकती है, मगर इंसानियत नहीं। मशीन जवाब दे सकती है मगर हिकमत नहीं, मशीन मालूमात दे सकती है मगर किरदार नहीं। मशीन सबक दे सकती है मगर ज़िंदगी नहीं सिखा सकती। इसी लिए ए0आई0 के दौर में उस्ताद कहीं पीछे नहीं खड़ा है बल्कि वह एक नए मक़ाम पर खड़ा है— तालिब—ए—इल्म और टेक्नॉलॉजी के दरमियान रहनुमा बन कर, इल्म और हिकमत के दरमियान पुल बन कर और सबसे ज़्यादा इंसान और इंसानियत का मुहाफिज बन कर।

ए0आई0 शायद बेहतरीन मालूमात फ़राहम करने वाला मुआविन बन जाए, लेकिन

बेहतरीन इंसान बनाने वाला उस्ताद ही रहेगा, और आने वाले दौर का सबसे कामयाब उस्ताद वह नहीं होगा जो ए0आई0 से मुकाबला करे बल्कि वह होगा जो ए0आई0 को अपना मुआविन बना कर अपनी इंसानियत, अपनी बसीरत और अपनी तदरीसी सलाहियत को मजीद मजबूत करे।

उस्ताद मालूमात से ज़्यादा बसीरत (प्रतिभा) देता है:—

ए0आई0 किसी सवाल का जवाब दे सकती है लेकिन हर जवाब बिल्कुल दुरुस्त, सटीक या अखलाकी होगा यह ज़रूरी नहीं। तालिब—ए—इल्म को यह सीखना होगा कि— (अ) कौन सी मालूमात काबिल—ए—एतबार है? (ब) कौन सी मालूमात गलत या गुमराह—कुन है? (ज) किस मालूमात को कबूल किया जाए? (स) किस मालूमात पर सवाल उठाया जाए? (द) मालूमात को किस मक़सद के लिए इस्तेमाल किया जाए? यही तनकीदी सोच है, और इसे पैदा करने में उस्ताद का किरदार बुनियादी है।

उस्ताद किरदार—साजी करता है:—

ए0आई0 जहीन हो सकती है मगर उस के पास इंसानी जमीर नहीं। वह तालिब इल्म को बता सकता है कि कामयाबी कैसे हासिल की

जाए, मगर यह फैसला इंसान को खुद करना होगा कि कामयाबी हासिल करने के लिए कौन सा रास्ता चुना जाए, उस्ताद तालिब इल्म को सच्चाई, दयानतदारी, जिम्मेदार, हमदर्दी, बर्दाश्त, सम्मान, अल्लाह का डर, नज़्म जब्त और इंसानियत सिखाता है। यह वह अखलाक एवं मुल्य हैं जिन्हें कोई मशीन मुकम्मल तौर पर इंसानी तजुर्बे का बदल बना कर नहीं दे सकती।

उस्ताद जज़्बात को समझता है:—

हर तालिब—ए—इल्म (छात्र) सिर्फ एक “डेटा” नहीं है, किसी तालिब—ए—इल्म की कार्य—कुशलता खराब हो सकती है क्योंकि वह परेशान है, कोई तालिब—ए—इल्म क्लास में खामोश हो सकता है क्योंकि वह खुद—ऐतमादी की कमी का शिकार है, कोई तालिब—ए—इल्म बार—बार नाकाम हो सकता है मगर उसके अंदर गैर—मामूली सलाहियत (असाधारण योग्यता) होती है।

एक हस्सास (संवेदनशील) उस्ताद तालिब—ए—इल्म की आँखों, खामोश रवैये और जज़्बात से बहुत कुछ समझ लेता है। ए0आई0 तालिब—ए—इल्म के जवाब का तजजिया (विश्लेषण) कर सकती है, लेकिन इंसानी ताल्लुक की

गहराई का मुकम्मल (पूर्ण) मुझे तुम पर यकीन है। एक ताल्लुक तालिब-ए-इल्म के मुतबादिल (विकल्प) नहीं बन सकता। उस्ताद का यह जुमला किसी दिल पर एक अलग असर सकता है। नाकाम तालिब-ए-इल्म को डालता है।

उस्ताद हौसला देता है:- दोबारा खड़ा कर सकता है। एक अच्छा उस्ताद सिर्फ जिंदगी में बाज-औकात ए0आई0 मशवरा दे सकती है, सबक नहीं पढ़ाता, बल्कि (कभी-कभी) एक जुमला इंसान लेकिन उस्ताद की शख्सियत, तालिब-ए-इल्म को अपने आप की पूरी जिंदगी बदल देता है- तजुर्बा, शफकत और इंसानी पर यकीन करना सिखाता है।

..... ❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरखास्त

मदरसतुल हुरम रहमान खेड़ा, हबीबपुर, हरदोई रोड लखनऊ के संस्थापक, हमारे अजीज दोस्त एवं सहपाठी मौलाना नजीबुल हसन सिद्दीकी नदवी की फूफी जान रुक़रूया बानो का करीब एक माह की बीमारी के बाद दिनांक 16.9.2026 को इंतक़ाल हो गया “इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि रजिऊन”।

मरहूमा बहुत ही नेक, दीनदार, नमाज़ रोज़े की पाबंद, खानदान के छोटों और बड़ों का ख्याल रखने वाली, निहायत ही मिलनसार, मेहमान नवाज़ और गरीब परवर खातून थीं। अल्लाह मरहूमा की मग़फ़िरत फरमाए दरजात बुलंद फरमाए और जन्नत में आला मकाम अता फरमाए, और मरहूमा के शौहर जनाब शमीमुल हसन, बेटे फख़रुल हसन और बदरुल हसन, इनके बच्चों बच्चियों और समस्त परिवारजनों को सब्से जमील अता फरमाए आमीन। हम अपने समस्त पाठकों से खुसूसी दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरखास्त करते हैं।

(उप सम्पादक)

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के ☎ नं0 9450784350 का प्रयोग करें।

E-mail: jamalnadwi123@gmail.com

दुर्गे यतीम

मंजर आलम अल्वी नदवी

मानव इतिहास में कुछ ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनका जीवन किसी एक जाति, राष्ट्र अथवा धर्म तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा, नैतिकता तथा सदाचार का शाश्वत आदर्श बन गया। हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्ल०) ऐसे ही महान् व्यक्तित्व हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन सत्य, करुणा न्याय, समता, शान्ति, क्षमा तथा परोपकार का अनुपम उदाहरण है।

एक ऐसा युग जिसमें हर तरफ अंधकार, अन्याय असमता और अज्ञान फैला हुआ था। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में छोटी-छोटी बातों पर कई वर्षों तक लड़ाईयाँ होती थीं।

आप सल्ल० के आगमन से पूर्व समाज अनेकों बुराईयों में ग्रस्त था। मूर्ति पूजा का व्यापक प्रचलन था। जातीय अहंकार और संघर्ष सामान्य बात थी। स्त्रियों को सम्मान प्राप्त नहीं था। कन्या-वध जैसी अमानवीय प्रथा विद्यमान थी। निर्धनों, अनाथों तथा दासों पर अत्याचार होता था। मद्यपान, जुआ और तरह- तरह

की बुराईयाँ फैली हुई थीं।

ऐसे कठिन समय में ईश्वर ने एक यतीम अर्थात् हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मानवता का मार्गदर्शक बना कर भेजा ताकि संसार को सत्य, न्याय और करुणा का मार्ग दिखाया जा सके।

आप (सल्ल०) के पिता का नाम हज़रत अब्दुल्लाह तथा माता का नाम आमिना है। जन्म से कुछ माह पहले ही आपके पिता का देहान्त हो गया था। इस प्रकार आपने संसार में एक अनाथ बालक के रूप में जन्म लिया किन्तु अल्लाह की विशेष कृपा सदैव आपके साथ रही।

पवित्र कुरआन में अल्लाह कहता है "और हमने आपको समस्त संसारों के लिए केवल दया बनाकर भेजा है।"

(सूरह अल-अंबिया 21:107)

एक अन्य स्थान पर कहा गया है "निश्चय ही तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल के जीवन में सर्वोत्तम आदर्श है"

(सूर: अल-अहजाब 33:21)

पवित्र कुरआन की इन आयतों से यह स्पष्ट होता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

का जीवन सम्पूर्ण मानवता के लिए अनुकरणीय आदर्श है।

बचपन:—

लगभग 6 वर्ष की आयु में माता आमिना का देहान्त हो गया। इसके बाद आपके दादा अब्दुल मुत्तलिव ने पालन-पोषण किया। उनके निधन के पश्चात् आपके चचा अबू तालिब ने आपका संरक्षण किया।

इन कठिन परिस्थितियों ने आपके भीतर धैर्य करुणा, आत्मनिर्भरता और मानव सेवा की भावना को और अधिक सुदृढ़ कर दिया।

युवावस्था एवं श्रेष्ठ चरित्र के साथ आपने व्यापार किया। आपकी सत्यनिष्ठा ईमानदार और न्यायप्रियता के कारण सम्पूर्ण मक्का आपको अल-अमीन (विश्वसनीय) और अस-सादिक (सत्यवादी) के नाम से पुकारने लगा। धन पद और प्रतिष्ठा प्राप्त होने पर भी आपने कभी असत्य, छल अन्याय अथवा अहंकार का मार्ग नहीं अपनाया।

यही महान चरित्र आगे चलकर सम्पूर्ण मानवता के लिए आदर्श बना।



लहसुन खाएं पेट की समस्याएं दूर भगाएं

डॉ० चारु बागा

पेट से जुड़ी समस्याएं जैसे अपच, गैस और दर्द से बचने के लिए लहसुन का सेवन फायदेमंद माना जाता है। यह किसी औषधी से कम नहीं है। इसमें विटामिन बी6, विटामिन सी, विटामिन बी1, कैल्शियम, कॉपर, सेलेनियम आदि गुण पाए जाते हैं। शरीर में रोग प्रतिरोधक छमता बढ़ाने के लिए भी रोजाना खाली पेट इसकी दो कलियों का सेवन फायदेमंद माना जाता है। आइये जानते हैं लहसुन खाने से होने वाले फायदों के बारे में—

एसिडिटी दूर करे:—

पेट में हो रही एसिडिटी दूर करने के लिए लहसुन का काढ़ा पीना फायदेमंद हो सकता है। इसके लिए काला नमक, लहसुन की कलियों का पेस्ट, हींग, अजवाइन को

पानी में मिला कर उबालें। 5 मिनट तक पानी उबालने के बाद उसे छान लें। इस काढ़े को पीने से पाचन क्रिया भी बेहतर होगी।

गैस का इलाज:—

इसकी

लहसुन के सेवन से पेट की कई समस्याएं दूर हो सकती हैं। लेकिन इसके अधिक सेवन से कुछ स्वास्थ्य समस्याएं भी हो सकती हैं। इसलिए सीमित मात्रा में ही इसका प्रयोग करना बेहतर होगा।

दो कलियाँ पानी के साथ सुबह खाली पेट निगल जाएं, तो पेट की गैस से छुटकारा मिल सकता है।

अपच से राहत दिलाए:—

अपच से छुटकारा पाने के लिए लहसुन कारगर उपाय है। काली मिर्च के साथ लहसुन को पानी में उबाल कर पीने से अपच से राहत

मिलती है। इससे पेट में दर्द की समस्या भी दूर होगी।

पेट के कीड़ों से बचाए:—

इसमें एलिकिन पाया जाता है। इसके सेवन से पेट में कीड़ों की समस्या से बचाव संभव हो पाता है। इसके लिए गुनगुने पानी के साथ लहसुन के पाउडर का सेवन फायदेमंद होगा।

आँतों के लिए फायदेमंद:—

इसमें ऐंटीमाइक्रोबियल गुण होते हैं, जो हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट करने के लिए प्रभावी माना जाता है। इसका सीमित सेवन आँत के लिए फायदेमंद होता है।



(आयुष चिकित्यालय, कल्ली पश्चिम, लखनऊ)

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

प्रदर्शनी के लिए पेश किये गये 100 मीटर लंबे कफन पर गजा के 20 हजार से ज्यादा शहीद बच्चों के नाम लिखे गए:—

गजा में जान गंवाने वाले 20 हजार से ज्यादा फिलिस्तीनी बच्चों के हाथ से लिखे हुए नामों से बनी लगभग 100 मीटर लंबी यादगारी कफन न्यूयॉर्क के संयुक्त राष्ट्र चर्च सेंटर में प्रदर्शनी के लिए पेश की गई है।

इस प्रोजेक्ट का नाम “तादाद नहीं, नाम” रखा गया है। इसका मकसद ये है कि जंग में शहीद होने वाले बच्चों को सिर्फ एक आंकड़ा न समझा जाए, बल्कि उनके नाम और उनकी पहचान के साथ याद किया जाए।

आयोजकों ने इसके जरिए इजरायली सैन्य कार्रवाई को रोकने और जंगी अपराधों पर इंसोफ की मांग भी की है।

“गजा चिल्ड्रन्स श्राउड” नाम का ये यादगारी मंसूबा डॉक्टर्स अगेंस्ट जेनोसाइड, यू0एस0ए0 प्रिट्स अगेंस्ट जेनोसाइड, जस्टिस फॉर

ऑल’ और दूसरी संस्थाओं ने मिलकर तैयार की है।

5 साल तक वैलिड रहेंगे 15 साल से कम उम्र के बच्चों के पासपोर्ट:—

15 साल से कम उम्र के बच्चों के पासपोर्ट की वैधता अवधि में बदलाव किया गया है। अब 36 पन्नों वाला साधारण पासपोर्ट जारी होने की तारीख से पांच साल या बच्चे के 18 वर्ष की उम्र पूरी होने तक वैध रहेगा। पासपोर्ट (संशोधन) नियम— 2026 लागू हो गया है। नाबालिगों का पासपोर्ट शुल्क भी बढ़ाया गया है, हालांकि 8 साल से छोटे बच्चों और 60 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों के नए पासपोर्ट पर 10% छूट जारी रहेगी।

“स्टील स्लैग” से बनाई सबसे लंबी सड़क:—

जिंदल स्टील लिमिटेड ने छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में “स्टील स्लैग” से बनी दुनिया की सबसे लंबी सड़क तैयार कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से मान्यता हासिल की है। करीब 1.85 किलोमीटर लंबी और चार लेन वाली इस सड़क के

निर्माण में लगभग दो लाख टन प्रसंस्कृत स्टील स्लैग का इस्तेमाल किया गया है।

अरबपति विधायक पराग शाह ने सड़कों पर मांगी भीख:—

महाराष्ट्र के सबसे अमीर विधायकों में शामिल पराग शाह ने हाल में भिखारी का वेश धारण कर मुंबई की सड़कों पर भीख मांगते हुए एक दिन बिताया। इसका विडियो भी वायरल हो गया।

सफल कारोबारी शाह ने बताया कि उन्होंने जैन आध्यात्मिक गुरु नम्रमुनि की सलाह पर यह अनुभव किया। अपने अनुभव को साझा करते हुए विधायक ने कहा कि इस अनुभव से उन्हें मुंबई के लोगों के मददगार स्वभाव को भी करीब से देखने का मौका मिला। 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के दौरान दाखिल हलफनामे में भाजपा नेता ने 3,383 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति घोषित की थी। उस समय वह राज्य के सबसे अमीर उम्मीदवार थे।

❖❖❖

नदवतुल उलमा

पोस्ट बॉक्स न० 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)



مَدَوَّةُ اِلْمَلَاءِ
پوسٹ بکس۔ ۹۳۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ۔ ۲۲۶۰۰۷ (بھارت)

दिनांक: 22/09/2026

अहले खैर हज़रात से !

تاریخ _____

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअत पर मज़बूती से ज़मने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक़ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सड़क-ए-ज़ारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सड़कात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाजुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को कुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी

नाज़िरे आम नदवतुल उलमा

डॉ० मुहम्मद असलम सिद्दीकी

मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ०) तक़ीउद्दीन नदवी

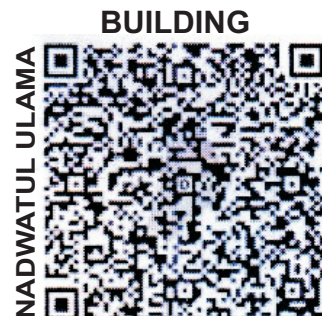
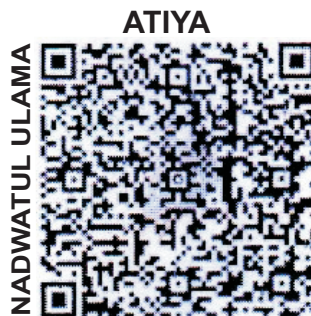
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ०) सईदुर्रहमान आजमी नदवी

मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: <https://www.nadwa.in/donation>

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION



(UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तज़मीर) अवश्य डालें।)

बरा-ए-करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं० 08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें
नोट: नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961 के तहत छूट प्राप्त होगी
Online Donation Link: <https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in>, Email: nizammat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date : 1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Chartagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI

Vol. 25 - Issue 08

Whatsapp & Call **9559844716**
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
<http://sachcha-rahi.nadwa.in>
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com



RK Renowned Name in Jewellery
JEWELLERS

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039



R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चैस्ट रोग, एण्डोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lucknow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3